लोकमंगल के लिए समय के सुनियोजन का यह उत्तम अवसर है 2

सक्रियता का आदर्श प्रस्तुत करती नवयुग की तरुणाई 3

जयपुर से हुआ 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान का शुभारम्भ 6

श्रद्धेया जीजी का जन्मदिन गीता के अध्ययन से जीवन में स्थिरता आती है 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news.shantikunj@gmail.com

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जनवरी 2021

वर्ष : 33, अंक : 14

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 जनवरी 2021

वार्षिक चंदा : .....₹60/-

वार्षिक चंदा (विदेश) :.....₹ 800/-

प्रति अंक : .....₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23

प्रार्थना की शक्ति संसार में सबसे बड़ी शक्ति है।

- डॉ. अलेक्सीस केरेल, नोबल पुरस्कार विजेता

स्वामी श्री सवितानन्द जी की पुस्तक 'स्तोत्र मंत्रों का विज्ञान' से साभार संकलित, सम्पादित

फ्रांस में डॉक्टर ॲलेक्सीस कॅरेल (सन् 1900 के लगभग) का बहुत बड़ा नाम था। उनका एक रोगी बहुत धनी, परन्तु अनेक रोगों से पीडित था, मुख्यतः क्षय रोग से। उसकी तबीयत दिन पर दिन खराब होती जा रही थी। किसी दवा का कोई फायदा नहीं हो रहा था। यह उस समय की बात है, जिस समय क्षयरोग पर कारक दवा का अनुसंधान नहीं हुआ था।

एक दिन वह रोगी डॉक्टर से बोला- "डॉक्टर साहब, मैंने ऐसा सुना है कि अपने देश में दक्षिण में पिरनीज पहाड़ की गोद में लूर्द नाम का गाँव है। वह तीर्थ स्थान है। वहाँ एक झरना बहता है। वहीं एक सेवाभावी संस्था भी है। वहाँ जो कोई रोगी जाता है, उस सेवाभावी संस्था के सभी कर्मचारी उसके लिए मन से प्रार्थना करते हैं और फिर उस झरने में स्नान करने के लिए कहते हैं। इससे वह रोगी निरोग हो जाता है। मुझे वहाँ जाना है और आपको मेरे साथ चलना पड़ेगा।

डॉक्टर केरेल एक समय के नास्तिक, तार्किक, पूर्णतः बुद्धिवादी थे, इसलिए उन्होंने स्वयं जाने से मना कर दिया। इसके विपरीत उन्होंने उस रोगी को समझाने का प्रयास किया कि ये सभी अर्थहीन व अन्धविश्वास की बातें हैं। वहाँ जाने से कोई भी लाभ नहीं होगा, बल्कि इतने दूर के प्रवास से आपका स्वास्थ्य और भी अधिक खराब हो जाएगा।

फिर भी उस रोगी ने पूछा- "डॉक्टर, अब तक आपने मुझ पर जितनी दवाओं का प्रयोग किया, क्या उससे मेरे स्वास्थ्य पर कोई अनुकूल प्रभाव पड़ा है?" डॉक्टर ने कहा - "नहीं"। "क्या और किसी दवा का उपचार बाकी है?" डॉक्टर बोले- "नहीं, अब ऐसी कोई दवा मेरे पास नहीं है जो तुम्हें दी जा सके।" फिर यह प्रयोग करके देखने में क्या हर्ज है! मैं तो ऐसे ही मरने वाला हूँ, फिर एक बार वहाँ जाकर आने में क्या हर्ज़ है? आपको मेरे साथ केवल इसलिए आना है कि रास्ते में कहीं मेरा स्वास्थ्य अधिक खराब हो जाए तो आप मेरा उपचार कर सकें। आपका जो आर्थिक नुकसान होगा, मैं उसकी भरपाई कर दूँगा। अब मेरे साथ आने से इन्कार मत करना । अन्त में डॉक्टर तैयार हो गए।

वहाँ जाने पर डॉक्टर केरेल ने स्वयं व वहाँ पर कार्यरत अन्तर्राष्ट्रीय मेडिकल संस्था के विद्वान तथा अनुभवी डॉक्टरों ने फिर उनकी शारीरिक जाँच की। डॉक्टरों ने सलाह दी कि दोनों फेफड़ों के नीचे घाव होकर वे टी.बी. में व्याप्त हो गए हैं। असाध्य स्थिति है। रोगी कुछ दिनों का नहीं, अपितु कुछ घण्टों का मेहमान है। किस क्षण प्राण ज्योति बुझ जाए, कह नहीं सकते।

डॉक्टरों की इस सलाह से वहाँ कार्यरत सभी कर्मचारी एकत्र हुए। उन्होंने रोगी के लिए मनःपूर्वक भगवान से प्रार्थना की और तदनन्तर झरने में स्नान करने के लिए उतरने को कहा। इससे पूर्व डॉक्टर केरेल स्वयं पानी में उतरे। पानी इतना ठण्डा था कि उन्हें विश्वास हो गया कि रोगी पानी में इस अवस्था में उतरा है तो उसका शव ही बाहर आएगा। उन्होंने उसे फिर समझाने का प्रयत्न किया, परन्तु रोगी नहीं माना। पानी में उतरकर कुछ समय तक डुबकियाँ लगा कर जब बाहर आया तो उसके शरीर में स्फूर्ति थी। उसे इस प्रकार बाहर आया हुआ देखकर डॉक्टर आश्चर्यचकित हो गए। फिर तो कुछ दिन डॉक्टर वहीं रहे। उनका रोगी स्वस्थ होने लगा, डॉक्टर को बहुत आश्चर्य हुआ, पर उनका बुध्दिजीवी वैज्ञानिक मन इस आश्चर्य को स्वीकार नहीं कर पा रहा था। उनको लगा इस झरने के पानी में कुछ औषधीय गुण होने चाहिए।

डॉक्टर केरेल अनुसंधान के लिए पानी का नमूना लेकर अपने मेडिकल कॉलेज में वापस आ गए। कई प्रयोग किये, परन्तु निष्कर्ष यही निकला कि कोई निरोग मनुष्य भी इस पानी में स्नान करने के लिए उतरे तो रोगी होकर ही बाहर आएगा। इतना दूषित पानी, पर प्रत्यक्ष में उनकी वैज्ञानिक मान्यता के विरुद्ध सब कुछ घटित हो रहा था। उन्होंने वहाँ यह भी देखा था कि वहाँ दिनभर में एक प्याला पानी प्रत्येक व्यक्ति पी रहा था।

डॉक्टर केरेल की वैज्ञानिक बुध्दि को, वैद्यक ज्ञान को अन्त में हार माननी पड़ी और उनके मुख से निकला- "प्रार्थना की शक्ति संसार में सबसे बड़ी शक्ति है।" उनके मुख से श्रध्दा, प्रेम, आस्तिकता से भरे हुए इस वाक्य को सुनकर उनके अधीन मेडिकल का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी, भावी डॉक्टर आश्चर्यचकित हो गए और उसके पश्चात् इस वाक्य को उल्टा-सीधा करके उसकी चर्चा वहाँ की शैक्षणिक संस्थाओं की दीवार लांघ कर पूरे फ्रांस में फैल गई, क्योंकि डॉक्टर केरेल का फ्रांस में बहुत बड़ा नाम तथा दबदबा था। उनके विरोधियों ने और उनसे द्वेष रखने वाले ईर्ष्यालु लोगों ने इसका बहुत फायदा उठाया। मेडिकल कॉलेज से निकाल दिया गया। उनकी नौकरी चली गई। वे अमेरिका में आए। रॉक फेलर संस्था में नौकरी स्वीकार की और उन्हें मेडिकल के क्षेत्र में किए गए अनुसंधान के लिए नोबेल पुरस्कार भी मिला। प्रार्थना की शक्ति पर उनकी अटूट श्रद्धा हो गई। वैद्यकीय क्षेत्र में इस पर उन्होंने अनेक प्रयोग किये। उन्हीं के प्रयत्न से अमेरिका और इंग्लैंड में अनेक सरकारी व संस्थाओं के अस्पतालों में नियम से रोगियों के लिए प्रातःकाल व सायंकाल प्रार्थना होने लगी। अभी भी हो रही है। पादरी, डॉक्टर्स, नर्सेस व अन्य कर्मचारी, रोगी व रोगी के संबंधी सभी उसमें सहभागी होते हैं और उसका उत्तम परिणाम रोगी पर होता है। वह रोगमुक्त होता है।

प्रार्थना की चमत्कारिक शक्ति से जुड़े कुछ तथ्य

परम पूज्य गुरुदेव ने भी अपने साहित्य में प्रार्थना की चमत्कारिक शक्तियों का भरपूर वर्णन किया है। **दैनिक गायत्री उपासना भी उच्च कोटि की प्रार्थना ही है,** जिसके सत्परिणाम हर उपासक को अनुभव होते हैं। अपने मिशन की 'अद्‌भुत, आश्चर्यजनक, किन्तु सत्य' पुस्तक में ऐसी अनेक चमत्कारिक घटनाओं का उल्लेख है। स्वामी सवितानन्द जी ने अपनी पुस्तक में प्रार्थना के आश्चर्यजनक प्रभाव वाली घटनाएँ लिखी हैं, जिनके गवाह वे स्वयं रहे हैं। प्रस्तुत हैं प्रार्थना के संदर्भ में उनके द्वारा लिखी गईं कुछ महत्त्वपूर्ण बातें-

प्रार्थना त्रितापहारिणी

प्रार्थना **त्रितापहारिणी** है। प्रार्थना से तीनों प्रकार के दुःख **दैहिक** (तुम्हारे शरीर सम्बन्धी, जिनके लिए तुम स्वयं उत्तरदायी हो), **भौतिक** (तुम्हारे अतिरिक्त दूसरों के व्यवहार के कारण होने वाले कष्ट) तथा **दैविक** (बाढ़, भूकम्प, ओलावृष्टि जैसी आपदाएँ) को दूर करने में प्रार्थना कारगर होती है।

भगवान शिव को बिल्व पत्र एवं गणेश जी को दूर्वा (दोनों ही तीन पत्तों वाले हैं) चढ़ाना तीनों तापों से मुक्ति के लिए की गई प्रार्थना है। भगवान शिव और महाकाली के हाथ के त्रिशूल भी त्रितापों के नाश के लिए ही धारण किए हैं।

प्रार्थना का स्वरूप

विकल्परहित श्रद्धा व गद्‌गद होकर तन्मयता से की गई शंकारहित प्रार्थनाएँ प्रभावशाली होती हैं। प्रार्थना के अक्षर शब्द रचना महत्त्वपूर्ण न होकर उसका भाव महत्त्वपूर्ण होता है। आपकी भावना जिससे आन्दोलित होगी, तूफान आएगा, फव्वारे फूटेंगे या कल-कल निर्मल झरना जैसे भाव प्रवाहित होंगे, वे महत्त्वपूर्ण हैं। प्रार्थना वास्तव में उस वक्त अधिक फलदायी होती है जब व्यक्ति ईश्वरीय सान्निध्य का, समीपता का आन्तरिक अनुभव कर सके। ऐसा आन्तरिक अनुभव मानसिक प्रसन्नता उत्पन्न करता है। **प्रेम ईश्वरीय शक्ति है।** इसलिए स्वाभाविक रूप से उसका परिणाम मनुष्य के शरीर पर, मन पर होता है। इसीलिए अनेक रोगों पर दवा की अपेक्षा प्रार्थना अधिक लाभदायक सिद्ध होती है।

महानुभावों के मत

• एक अमेरिकन डॉक्टर डैनी सहगल ने अपनी पुस्तक में लिखा है, "ऐसी कोई बीमारी नहीं, जो पूर्ण प्रेम से ठीक न हो सके। ऐसा कोई मतभेद, मनभेद, कटुता नहीं, अन्तर नहीं जिसपर पूर्ण प्रेम से पुल न बाँधा जा सकता हो। पूर्ण प्रेम ही एक तरह से ईश्वरीय प्रार्थना है।"

• विलियम शेक्सपीयर ने कहा है, "प्रेम ईश्वरीय शक्ति है।" प्रार्थना से प्रेम प्रकट होता है और प्रेम से प्रार्थना हृदय में उतरती है। प्रार्थना अर्थात् ईश्वर से प्रेम का संवाद। वह यदि साध्य हो जाये तो बीमारी कैसी?

सूक्ष्म बीमारियों पर प्रभाव

कई बार बीमारी का कारण व्यक्ति की नकारात्मक मानसिकता और विचारधारा होती है। उसे औषध से नहीं बदला जा सकता, प्रार्थना से (प्रेम से) उसे बदला जा सकता है।

गत शताब्दी तक आधुनिक मेडिकल साइंस ने एक बहुत बड़ी भयंकर भूल की, मनुष्य को मशीन यंत्र समझकर उपचार करने की। अब यह गलती सुधारने का प्रयत्न हो रहा है। मनुष्य की भावना, मन, बुद्धि, श्रद्धा, प्रेम अथवा इनके विपरीत द्वेष, कटुता, घृणा, सकारात्मकता-नकारात्मकता विचार की तरफ भी ध्यान दिया जा रहा है। इस सम्बन्ध में एक बात स्पष्ट करता हूँ। एकाध व्यक्ति सर्वसामान्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक कामी, अधिक क्रोधी, अधिक लाभी हो और उससे जो रोग उत्पन्न होते हैं, उस पर कोई दवा काम नहीं देती। प्रार्थना, प्रेम व सकारात्मक विचार वाले स्वभाव में परिवर्तन लाना ही रोगमुक्ति का उपाय है। काम अधिक होगा तो वात विकार (उन्माद), क्रोध से पित्त और लोभ से कफ उत्पन्न होता है।

एक ध्यानाकर्षक परम्परा

डॉक्टर पर्ची पर दवा लिखने से पहले **Rx** लिखते हैं वह क्या है? वस्तुतः **Rx** एक लेटिन वाक्य का संक्षिप्त रूप है, जिसका अर्थ है कि "हे प्रभो, मैं (डॉक्टर) रोगी के लिए आपसे प्रार्थना करता हूँ कि यह दवा मेरे रोगी को स्वस्थ होने दे।"

अपनी प्राचीन परम्परा के अनुसार वैद्य वनौषधियों को चुनने से पहले उनसे उनके आरोग्यवर्धक गुणों को प्रकट करने की प्रार्थना करते और जनकल्याणार्थ चुनने की अनुमति माँगते रहे हैं।

समय ईश्वर प्रदत्त सर्वोत्तम सम्पदा है

लोकमंगल हेतु समय के सुनियोजन का यह उत्तम अवसर है

हम जीना सीखें

बीज का सर्वोत्तम सौभाग्य है कि वह अपने सृजेता की तरह ही विकसित होकर अनेकों को शीतल छाया, पत्र, पुष्प, फल, फूल, काष्ठ आदि प्रदान करते हुए अपना जीवन धन्य बनाये। जिन बीजों को यह अवसर नहीं मिलता वे पिसते, घुनते, सड़ते हुए ही नष्ट होते दिखाई देते हैं।

सतत प्रवाहित होने वाली नदियाँ सदानीरा एवं स्वच्छ रहती हैं। वे जहाँ से गुज़रती हैं वहाँ वातावरण में ताजगी का संचार करती, फसलों को सींचती, प्यासों की प्यास बुझाती जाती और गंदगी को धोती जाती हैं। जहाँ प्रवाह रुका, वहीं उसमें सड़न और बदबू पैदा होने लगती है।

धन कुबेर तो अनेक हुए, लेकिन ज़रूरत के समय समाज और संस्कृति के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले भामाशाह जैसा सम्मान गिनती के समझदार लोगों को ही मिला है।

परम पूज्य गुरुदेव ने अपने प्रवचनों में, लेखनी से न जाने कितनी बार ऐसे उदाहरणों के साथ हमें जीवन की सार्थकता सिद्ध करने के लिए प्रेरित किया है। जो समझ गये और बड़प्पन की अपेक्षा महानता का पथ चुनकर महाकाल के सच्चे सहयोगी बन गये, जो विश्व को अपना परिवार मानकर उसके उत्कर्ष के लिए समर्पित हो गए, वे धन्य हो गये। निःसंदेह उन्हें जो आत्मसंतोष, लोकसम्मान एवं दैवी अनुग्रह प्राप्त हुआ होगा वह अतुलनीय है। जीते तो पशु-पक्षी भी हैं। लेकिन उनकी ही तरह वासना, तृष्णा में फँसकर स्रष्टा के सर्वोत्तम उपहार 'मानव जीवन' को व्यर्थ गँवा दिया तो उससे अधिक विडंबना क्या हो सकती है।

मोहनदास कर्मचन्द गाँधी एक कुशल बैरिस्टर थे। वे चाहते तो अपनी वकालत से बड़े आदमी बनकर आरामदायक जीवन जी सकते थे। लेकिन वे मानवता की भलाई के लिए सत्य को अपना सबसे बड़ा शस्त्र बनाकर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। वे महात्मा बनते चले गए। ऐसे साहसी कदम बढ़ते हैं तो दैवी सहयोग और अनुदान भी अनायास ही मिलने लगते हैं। अनेकों देवात्माएँ भी उनके स्वतंत्रता आन्दोलन में सहयोगी बनती चली गईं।

ऐसे न जाने कितने दैदीप्यमान नक्षत्र हमारे गौरवशाली इतिहास के पृष्ठों पर अंकित हैं। उससे भी लाखों गुना अधिक वे लोग हैं जो आदर्शों के लिए जिए और आदर्शों के लिए मरकर भी अपना जीवन धन्य कर गए।

बोओ और काटो

परम पूज्य गुरुदेव ने क्रान्तिधर्मी साहित्य की पुस्तक **'समयदान ही युगधर्म'** में महानता के पथ पर अग्रसर होने का एक ही सूत्र दिया है, वह है 'दान'। वे लिखते हैं-

"यहाँ समस्त महामानव मात्र एक ही अवलम्बन अपनाकर उत्कृष्टता के प्रणेता बन सके हैं, कि उन्होंने संसार में जो पाया, उसे प्रतिफल स्वरूप अनेक गुना करके देने का व्रत निभाया।"

मनुष्य जीवन इस संसार में परमात्मा की सर्वोत्तम कृति है। परमात्मा ने मनुष्य को इस संसार में अनेक प्रकार की विभूतियाँ देकर भेजा है। ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा, समय, धन-साधन, भाव संवेदनाओं को विकसित करने और उनका सदुपयोग करते हुए उन्हें परमात्मा के खेत में बोने की सामर्थ्य केवल मनुष्य में ही है। वह जो बोता है, वही काटता है।

आज समाज में धन का बोलबाला है। 'धनदान' को ही 'दान' शब्द का पर्याय मान लिया गया है। लेकिन धनदान के साथ कई विसंगतियाँ भी जुड़ी हैं। धनदान की सामर्थ्य हर किसी की नहीं होती। बहुत से लोग सेवाभाव से नहीं, स्वार्थ की भावना के साथ धनदान करते देखे जाते हैं। दान के नाम पर अपनी यशवृद्धि या अहंकार की पूर्ति ही उनका प्रयोजन होता है।

दान के संदर्भ में पूज्य गुरुदेव ने लिखा है-

*"दान करने से पुण्य प्राप्त होता है, इस कथन के पीछे यह मान्यता रही है कि उसे श्रद्धा भरी भाव-संवेदना से, सत्प्रयोजनों के लिए ही देने की मर्यादा का ध्यान तो रखा ही गया होगा। यदि ऐसा नहीं है एवं उसके साथ दुरभिसंधियाँ जुड़ी रहें, तो प्रतिक्रिया एवं परिस्थिति के अनुरूप वह पाप के समकक्ष है और देने तथा लेने वाले दोनों को ही बदनाम करने के साथ-साथ उनके लिए अनर्थ भी उत्पन्न कर सकता है। इसलिए दान-भावना को चरितार्थ करने के साथ-साथ **उत्कृष्टता और विवेकशीलता** की शर्त भी पूरी कर ली गई होगी, यही अपेक्षा रखी जाती है।"*

समयदान-आज का युगधर्म

प.पू. गुरुदेव ने 'युग निर्माण सत्संकल्प' में अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए नियमित रूप से लगाते रहने का आह्वान किया है। इनमें अन्य विभूतियाँ तो हर मनुष्य के पास कम या अधिक भी हो सकती हैं, लेकिन परमात्मा ने समय सबको बराबर-बराबर दिया है। अन्य विभूतियों का दान और विकास भी समय सम्पदा के सुनियोजन से ही सम्भव हो पाता है। धनदान की ही बात करें तो भूखे को स्वयं अपने हाथ से भोजन कराने और ठिठुरते हुए को कम्बल ओढ़ाने में जो सुख मिलता है, वह सदाव्रत चलाने के लिए लाखों रुपये का दान करने वालों को कहाँ मिल पाता है?

आज का सबसे बड़ा संकट है आस्था संकट। इसके निवारण के लिए सर्वाधिक आवश्यकता समयदान की ही है। परम पूज्य गुरुदेव ने इसीलिए समयदान को आज का युगधर्म कहा है। उन्होंने अपने हर अनुयायी, समर्थक, सहयोगी से आत्मनिर्माण के लिए उपासना, साधना, आराधना को जीवन में अनिवार्य रूप से शामिल करने तथा समाज निर्माण के लिए समयदान एवं अंशदान करने का संकल्प कराया है।

समयदान के संकल्प तो लाखों लोगों ने लिए हैं, देखना इतना ही है कि उनका पालन एवं सुनियोजन कितने लोग कर पा रहे हैं? पूज्य गुरुदेव लिखते हैं-*"वस्तुतः समयदान तभी बन पड़ता है, जब अन्तराल की गहराई में आदर्शों पर चलने के लिए बेचैन करने वाली टीस उठती हो।"*

हमें परम पूज्य गुरुदेव के अंग-अवयव बनने का सौभाग्य मिला है। उन्होंने बार-बार एक ही आह्वान किया है-युग की समस्याओं के समाधान के लिए समयदान कीजिए। युगऋषि की पुकार को सुनकर भी जिनके अन्तराल की गहराई में आदर्शों पर चलने की बेचैनी उत्पन्न न हो, उन्हें क्या कहा जाय?

पूज्य गुरुदेव लिखते हैं- *"यह असाधारण समय है। तत्काल निर्णय और तीव्र क्रियाशीलता उसी प्रकार आवश्यक है जैसी कि आग बुझाने या ट्रेन छूटने के समय होती है। हनुमान, बुद्ध, समर्थ गुरु रामदास, विवेकानन्द आदि ने समय आने पर शीघ्र निर्णय न लिए होते तो वे उस गौरव से वंचित ही रह जाते, जो उन्हें प्राप्त हो गया।"*

समयदान का सुनियोजन भी हो

शान्तिकुञ्ज से लेकर शक्तिपीठों तक हर क्षेत्र में युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित समयदानियों की माँग निरंतर रहती है। हर क्षेत्र में युग निर्माण आन्दोलन को गति दी जानी है। यह कार्य समयदान के बिना संभव नहीं हो सकता। ऐसे में संगठन के स्तर पर समयदानियों के समय का सुनियोजन करने का प्रभावशाली तंत्र बनाने की आवश्यकता है। दूसरी ओर समयदान का संकल्प ले लेना ही काफी नहीं है, अपने समय का सुनियोजन कैसे हो, यह भी देखना होगा। युग निर्माण आन्दोलन में ऐसे ढेरों काम हैं जिनके माध्यम से अपने समय का सदुपयोग किया जा सकता है। जैसे-

जनसंपर्क अभियान : अवतारी सत्ताएँ अपने युग की समस्याओं के अनुरूप उनके समाधान प्रस्तुत करती रही हैं। भगवान श्रीकृष्ण ने असुरता के भय को मिटाने और ग्वाल-बालों में आत्मविश्वास जगाने के लिए बाललीला, रासलीला, खेल-कूद, गोपालन जैसे कार्यक्रम चलाए। गाँधी जी का सत्याग्रह लोगों में अनीति के विरुद्ध उठ खड़े होने का साहस जगाने में सफल रहा।

इस युग की समस्याओं की जड़ एवं तमाम विसंगतियों का कारण मानवीय दुर्बुद्धि ही है। मानव-मानव के बीच जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, प्रान्त, अमीर-ग़रीब, ऊँच-नीच की दीवारें और पर्यावरण संकट, युद्धों का संकट आदि अविवेकपूर्ण सोच ने ही खड़े किये हैं। परम पूज्य गुरुदेव ने इन सबके समाधान के लिए युग चेतना को घर-घर पहुँचा देने का अभियान चलाया। इस अभियान से घर-घर गायत्री, अर्थात्-सद्बुद्धि, सद्ज्ञान एवं सद्विवेक तथा यज्ञ, अर्थात्-सत्कर्म, सकारात्मकता, सृजनात्मकता को पहुँचा पाना हम सबके सामूहिक पुरुषार्थ से, समयदान से ही संभव होगा।

इन दिनों घर-घर गायत्री, घर-घर यज्ञ, घर-घर सद्ज्ञान, घर-घर संस्कार को पहुँचाने के लिए व्यापक अभियान चलाया जा रहा है। सघन जनसंपर्क ही इसका एकमात्र विकल्प है। इन दिनों धार्मिक प्रवचनों, पुस्तकों, सोशल मीडिया पर संदेशों की भरमार है। लेकिन आवश्यकता आत्मीयता के विस्तार की है, जो प्रत्यक्ष जनसंपर्क से ही पूरी हो सकती है। युग निर्माणी अपनी वाणी नहीं, अपने सच्चरित्र एवं उत्कृष्ट व्यक्तित्व से लोगों की पीड़ा को दूर करने में, उनके कष्ट-परेशानियों को दूर करने में सहायता कर सकें, तभी युगचेतना विस्तार का अभियान प्रभावशाली बन सकेगा। इसके लिए घर-घर संपर्क का नियमित क्रम बनाए जाने की आवश्यकता है।

अच्छा हो कि शक्तिपीठें और संगठित इकाइयाँ योजनाबद्ध होकर हर परिजन को इस कार्य के लिए प्रेरित करें और उनके हर प्रकार के समयदान का सार्थक नियोजन करें। गृहे-गृहे यज्ञ अभियान, ग्रामतीर्थ यात्राएँ, साइकिल यात्राएँ, झोला पुस्तकालय जैसे माध्यमों से घर-घर पहुँचने की योजनाएँ बनाई जा सकती हैं।

मिशन की पत्रिकाओं का योगदान : अखण्ड ज्योति (कई भाषाओं में प्रकाशित) एवं युग निर्माण योजना पत्रिकाओं को घर-घर तक पहुँचाना होगा। वहीं नये घरों तक पहुँचने में प्रज्ञा अभियान बड़ी सहायता कर सकता है। वर्ष में एक व्यक्ति से 24 बार संपर्क होगा तो उसका प्रभाव पड़ेगा ही। इस समाचार पत्र के माध्यम से नये व्यक्तियों को मिशन का परिचय देना और अपनी विचारधारा से अवगत कराना सरल हो जाएगा।

अखण्ड ज्योति सदस्यता अभियान

दिसम्बर-जनवरी पत्रिकाओं के सदस्य बनाने/नवीनीकरण करने का समय है। अतः इन दिनों इस ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। अखण्ड ज्योति के ग्राहक/पाठकों की संख्या जितनी बढ़ेगी, युगचेतना का उतनी ही तेजी से विस्तार होगा। इस कार्य में पुरानी अखण्ड ज्योति पत्रिकाओं का संकलन और योग्य पात्रों में वितरण बहुत उपयोगी सिद्ध होता है।

अन्य योजनाएँ : इसके अलावा भी सप्त आन्दोलनों में भागीदारी, दीवार लेखन, प्रज्ञा केन्द्रों की सुव्यवस्था जैसे ढेरों काम हैं, जिनमें हर व्यक्ति अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का आसानी से सुनियोजन कर सकता है।

युग साहित्य प्रकाशन : परम पूज्य गुरुदेव के विचार ही नवयुग की क्रान्ति का आधार हैं। पूज्य गुरुदेव की पुस्तकों का देश-विदेश की भाषाओं में अनुवाद एवं उनका प्रकाशन भी एक भागीरथी कार्य है। इसके अन्तर्गत भाषान्तर करने, टाइप करने, प्रूफ रीडिंग जैसे कार्य हैं। जिनमें यह योग्यता है वे अपना समयदान इस कार्य के लिए कर सकते हैं। सहयोग के इच्छुक परिजन पीपीडी विभाग, शान्तिकुञ्ज से सम्पर्क कर सकते हैं।

सोशल मीडिया पर : यह सोशल मीडिया युग है। इसके माध्यम से भी युगचेतना का व्यापक विस्तार संभव है। शान्तिकुञ्ज ने सृजनात्मक, सकारात्मक संदेश, ऑडियो, वीडियो पोस्ट करने का एक सुव्यवस्थित तंत्र स्थापित किया है। जो इस कार्य में 10 मिनट प्रतिदिन का भी सहयोग कर सकते हैं, वे मोबाइल 9258360962 पर सम्पर्क करें।

सावधानी बरतें, सुरक्षित रहें

इन दिनों देश कोविड-19 संक्रमण के संकट से गुजर रहा है। ऐसे में सावधानी बरतना बहुत आवश्यक है। अपनी प्रत्येक गतिविधियों में मास्क पहनना, बार-बार साबुन से हाथ धोना, सामाजिक दूरी बनाए रखना एवं अन्य शासकीय नियमों का कड़ाई से पालन किया ही जाना चाहिए।

आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार

वर्ष-2021 एक अद्भुत संयोग लेकर आया है। यह शान्तिकुञ्ज की स्थापना का स्वर्ण जयन्ती वर्ष है और हरिद्वार में कुम्भ मेले का आयोजन भी संयोगवश एक वर्ष पूर्व इसी वर्ष हो रहा है। कोरोना प्रोटोकॉल के कारण अधिकांश लोगों के कुम्भ मेले में आ पाने की संभावना कम ही लगती है, लेकिन शान्तिकुञ्ज ने एक व्यापक अभियान चलाकर इस वर्ष 10,00,000 (दस लाख) लोगों के घरों में 'कुम्भ और युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज' के प्रतीकों की स्थापना का विराट अभियान पूरे देश में चलाया है। इसके लिए बहुत बड़ी संख्या में समयदानियों की आवश्यकता होगी। अतः इसमें सभी को भागीदार होना चाहिए।

निःसंदेह युग परिवर्तन होकर रहेगा। देखना इतना ही है कि भगवान कृष्ण का पाञ्चजन्य किन-किन जाग्रत् आत्माओं को झकझोरने में सफल रहा? साहस के साथ आगे बढ़ने वाले हर कदमों को दैवी चेतना का सहयोग, श्रेय-सौभाग्य मिलना अवश्यंभावी है, यह परम पिता परमात्मा का सनातन आश्वासन भी है।

भगवान जिस पर अनुग्रह करते है, उसकी सम्पदाएँ छीन लेते हैं और विभूतियाँ थमा देते हैं।

अभिनव समाज के निर्माण के लिए सक्रियता का आदर्श प्रस्तुत करती नवयुग की तरुणाई

स्वच्छता के संदेश के साथ बीते वर्ष की विदाई

तालाब से पॉलीथीन, बोतल एवं अन्य गन्दगी की मोटी परत हटाते गायत्री परिवार के परिजन

महादेव तालाब के बेहद गंदे पड़े मछली घाट की सफाई की

बीजापुर। छत्तीसगढ़

तरह-तरह की पार्टियों में जश्न मनाकर बीते वर्ष को विदा करने और नए वर्ष का स्वागत करने की आम परम्परा है। लेकिन गायत्री परिवार की सोच ही निराली है। बीजापुर के युवा युगसैनिकों ने नगर के महादेव तालाब पर सफाई अभियान चलाकर नगरवासियों को बेहतर समाज के निर्माण तथा उज्ज्वल भविष्य के लिए स्वयं जागरूक होने का संदेश दिया।

गायत्री परिवार के युवाओं ने निर्मल गंगा जन अभियान और जिला कलेक्टर श्री रितेश अग्रवाल के नगर स्वच्छता अभियान में भागीदारी करते हुए महादेव तालाब की सफाई का निश्चय किया। उन्होंने तालाब के सबसे गंदे स्थल मछली घाट को चुना और पूरी तन्मयता के साथ घाट के किनारों पर जमे प्लास्टिक एवं कूड़े-कचरे को एकत्रित कर उसका उचित निस्तारण किया। परिजन मोहल्ले के गंदे पानी के निकासी वाले गटर में उतरे और वहाँ जमा प्लास्टिक की थैली, बोतल आदि की लगभग एक फीट की गंदगी को हटाया। उल्लेखनीय है कि मुहल्ले की गलियाँ सकरी होने के कारण वहाँ नगरपालिका की गाड़ी नहीं आ पाती है और लोग सारा कचरा इसी तालाब के किनारे डाल देते हैं। गायत्री परिवार के परिजनों ने उचित स्थान पर कचरा डालने और शौच आदि से तालाब को गन्दा न करने का आह्वान भी किया।

सफाई श्रमदान के अवसर पर डिप्टी कलेक्टर, कमाण्डेण्ट नगर, मुख्य नगरपालिकाअधिकारी सहित गायत्री परिवार के शंकर कुडियम, जयपाल सिंह राजपूत, बीरा राजबाबू, बैधनाथ साहू, नरेन्द्र साहू, हेमन्त साहू, डी. लालैया, झाडी नागैया ने श्रमदान में भाग लेकर उत्साहवर्धन किया।

यज्ञधूम्र से नगर में सैनिटाइज़ेशन किया गया

यज्ञधूम्र को ग्रहण करने के लिए रथ तक पहुँच रहे नगरवासी

भीलवाड़ा। राजस्थान

भीलवाड़ा शहर में कोरोना संक्रमितों की संख्या लगातार बढ़ रही थी। ऐसी स्थिति में व्यावसायिक स्थलों पर अनजान लोगों का मेल मिलाप ज्यादा होने से संक्रमण का ख़तरा भी तेजी से बढ़ता है। अतः गायत्री परिवार ने शहर में वातावरण को आरोग्यवर्धक व शुद्ध बनाने हेतु यज्ञोपेथी का प्रयोग किया। 22 दिसम्बर तक यज्ञधूम्र से शहर के टेक्सटाइल मार्केट, मुरली टॉवर, एस.के. प्लाजा आदि 5 व्यावसायिक कॉम्पलेक्सों, 70 कार्यालयों व 19 कॉलोनीयों को सैनिटाइज़ किया गया।

> 5 व्यावसायिक कॉम्प्लैक्स एवं 19 कॉलोनियों को सैनिटाइज़ करने के लिए पहुँचा रथ

यज्ञोपैथी से सैनिटाइज़ेशन के लिए दो रथ तैयार किए गए थे। उन पर प्रज्वलित यज्ञकुण्ड रखे गए और उपरोक्त स्थानों पर घुमाए गए। प्रज्वलित अग्नि में विशेष हवन सामग्री की आहुतियाँ दी जाती रहीं। लोग बारी-बारी से पास आते और गहरी श्वास के साथ उन्हें सूँघकर औषधीय लाभ लेते थे। घर, दुकान, रेस्टोरेंट से अपने काम छोड़कर बड़ी संख्या में लोग यज्ञधूम्र सूँघने के लिए आते थे। आवश्यक सेवाओं में संलग्न लोगों ने भी इन सेवाओं का भरपूर लाभ लिया।

पूरे अभियान में लोगों को मिशन के सद्वाक्यों के स्टिकर और साहित्य भी बाँटे गए। जीवनी शक्ति संवर्धन के लिए घर पर विशेष हवन सामग्री से नियमित यज्ञ करने की प्रेरणा दी गई, यज्ञविधि के पैम्फ्लेट बाँटे गए। नगर परिषद के अधिशासी अभियंता एसपी संचेती सहित अनेक प्रशासनिक अधिकारियों ने इन सेवाओं की सराहना की।

सादगी का अर्थ दीनता, हीनता या दरिद्रता नहीं है, वरन यह है कि बिना आडम्बर के उपयुक्त और आवश्यक वस्तुओं का शुद्धतापूर्वक प्रयोग करना। यह सादगी हमारे नित्य व्यवहार में मिली हुई होनी चाहिए।
-अखण्ड ज्योति, 1941, पृष्ठ-9

10,000 से अधिक पेड़ लगवा चुके हैं डिप्टी कलेक्टर श्री मांगेराम चौहान

आदर्शनिष्ठ लोकसेवी

जमानत चाहिए तो दस पौधे लगाने होंगे

इकलौते बेटे के विवाह में मात्र एक रुपया और दो पौधे लिये

अमरोहा। उत्तर प्रदेश

श्री मांगेराम चौहान अमरोहा के डिप्टी कलेक्टर हैं। आए दिन अपराधियों से पाला पड़ता ही रहता है। उनमें जो लोग छोटे-मोटे विवादों में जमानत के लिए आते हैं, उनके समक्ष वे 10-10 पौधे लगाने और उनकी पूरी तरह से देखभाल करने की शर्त अवश्य रखते हैं। इतना ही नहीं, अपने पास आने वाले हर व्यक्ति को वे वृक्षारोपण की सलाह देते हैं। अपने इस अनूठे अभियान के अन्तर्गत वे अब तक 10,000 से अधिक पेड़ लगवा चुके हैं।

गाँव के शासकीय विद्यालय में पौधे रोपते नवदम्पति एवं श्री मांगेराम चौहान

श्री मांगेराम चौहान मूलतः शामली जिले के गाँव जसाला के निवासी हैं। प्रशासनिक अफसरों एवं गाँववासियों ने ही नहीं बल्कि बॉलीवुड के कई सितारों ने भी सोशल मीडिया पर उनके पर्यावरण प्रेम और पर्यावरण बचाने के अनूठे तौर-तरीकों को सराहा है।

इकलौते बेटे का आदर्श विवाह

6 दिसम्बर 2020 को श्री मांगेराम चौहान जी के इकलौते बेटे अभिषेक का विवाह बिस्सा खेड़ा निवासी अधिवक्ता संजीव कुमार राठी की बेटी साक्षी के साथ हुआ। उन्होंने विवाह के शगुन के रूप में मात्र एक रुपया और दो पौधे ही लिए। विवाह के बाद पहले वर-वधु ने गाँव के शासकीय विद्यालय में पौधा रोपा, फिर बाकी की रस्में पूरी कीं।

इस विवाह के माध्यम से डिप्टी कलेक्टर साहब ने समाज को एक बड़ा संदेश दिया है। उनकी कथनी-करनी में एकरूपता और पर्यावरण-समाज के प्रति जागरूकता, संवेदनशीलता निःसंदेह सराहनीय है। आज समाज को ऐसे ही आदर्श व्यक्तियों की आवश्यकता है जो अपने आचरण से लोगों को आदर्शों की राह पर चलने की प्रेरणा देते हों।

प्रान्तीय रक्तदान अभियान

झारखण्ड के 21 जिलों में रक्तदान शिविर सम्पन्न

687 यूनिट रक्तदान हुआ

टाटानगर। झारखण्ड

प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ, झारखण्ड के आह्वान पर प्रान्त के 24 में से 21 जिलों में एक साथ एक दिन 20 दिसम्बर 2020 को रक्तदान शिविर लगाया गया। पूरे प्रान्त में कुल 687 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। इसमें सर्वाधिक 179 यूनिट रक्त नवयुग दल टाटानगर के युवाओं द्वारा, 105 यूनिट युवा प्रकोष्ठ, पश्चिम सिंहभूम द्वारा, 51 यूनिट धनबाद के युवाओं द्वारा ,50 यूनिट साहिबगंज के युवाओं द्वारा, 50 यूनिट गिरिडिह के युवाओं द्वारा एकत्रित किया गया। गायत्री परिवार द्वारा इस कार्यक्रम को एक अभियान का रूप दिया गया था।

65वीं बार रक्तदान

झुमरीतिलैया, कोडरमा। झारखण्ड

गायत्री परिवार युवा मण्डल ने 20 दिसम्बर को रेडक्रॉस सोसाइटी के सहयोग से प्रेमचंद लाल मोदी की स्मृति में जिला स्तरीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में कुल 21 लोगों ने रक्तदान किया। रक्तदाताओं में श्री रितेश माधव भी शामिल थे, जिन्होंने 65वीं बार रक्तदान किया था। श्री रितेश माधव 15 अगस्त 2000 से रक्तदान कर रहे हैं। जीवन में 101 बार रक्तदान करना उनका लक्ष्य है।

समाजनिष्ठ बेटे की प्रेरणा से माँ ने लोकमंगल के लिए समर्पित कर दी पेंशन की बचत राशि

गायत्री तपोभूमि एवं माँ माधुरी बृज वारिस सेवा सदन को चेक भेंट करती श्रीमती शुक्को देवी

कुम्हेर, भरतपुर। राजस्थान

जिनके जीवन में युगऋषि की प्रेरणाएँ रची-पची हों और चरितार्थ होती दिखाई देती हों, ऐसे महानुभाव समाज के लिए एक प्रकाश स्तंभ सिद्ध होते हैं। ऐसे ही भावनाशील माँ और प्राणवान पुत्र ने धन के सदुपयोग का आदर्श प्रस्तुत किया है। गायत्री शक्तिपीठ कुम्हेर के व्यवस्थापक श्री कपूर चंद्र पूनिया की प्रेरणा से उनकी 90 वर्षीया पूज्य माता श्रीमती शुक्को देवी पत्नी स्व. श्री बने सिंह (भारतीय सेना से सेवानिवृत्त) ने अपनी पेंशन की बचत का एक बड़ा अंश बच्चों में न बाँटकर पीड़ित मानवता की सेवा और समाज के उत्थान के लिए दान कर दिया।

श्रीमती शुक्को देवी ने 1. पीड़ित मानव सेवार्थ संचालित 'माँ माधुरी बृज वारिस सेवा सदन, अपनाघर आश्रम' भरतपुर की टीम को 51000/- रुपये का चैक दिया। 2. गायत्री तपोभूमि मथुरा में निमार्णाधीन गायत्री मंदिर के लिए 51000/- का चैक गायत्री तपोभूमि मथुरा के श्री प्रमोद शर्मा जी को समर्पित किये। इसके अतिरिक्त उन्होंने अयोध्या में निमार्णाधीन श्री राम मंदिर के लिए एक लाख रुपये तथा गायत्री शक्तिपीठ कुम्हेर में निर्माण के लिए तथा अन्य लोकमंगल कार्यों के लिए दान करने का भी संकल्प लिया। इस अवसर पर वयोवृद्ध प्राणवान परिव्राजक एवं उच्च आदर्शों के प्रेरक श्री श्याम सुंदर शर्मा जी भी उपस्थित रहे।

महत्वपूर्ण बात यह है कि श्रीमती शुक्को देवी ने अपने तीनों पुत्रों को भी संकल्पित कराया है कि उनकी मृत्यु के पश्चात मृत्युभोज नहीं किया जाये। उनका यह संकल्प गायत्री परिवार के मृतक भोज बंद करने के अभियान को बल देने वाला है। स्वयं गायत्री परिवार के सदस्यों द्वारा ऐसा किए जाने से उसकी प्रमाणिकता और प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी।

स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया ने बाल संस्कार शाला की ग़रीब बालिकाओं की सहायता की

बेटी बचाओं अभियान के अन्तर्गत स्कूल बैग, स्वेटर एवं पाठ्य सामग्री बाँटी

पटना। बिहार

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ, पटना और स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के हेड ऑफिस, गाँधी मैदान, पटना द्वारा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान के अंतर्गत पटना की झुग्गी बस्ती में बालिकाओं के लिए स्कूल बैग, स्वेटर और पाठ्य सामग्री वितरित करने का पुनीत कार्य किया गया। उल्लेखनीय है कि युवा प्रकोष्ठ पटना इस क्षेत्र में बाल संस्कारशालाएँ चलाकर बच्चों को शिक्षित एवं संस्कारवान बना रहा है। स्टेट बैंक ने इन्हीं बाल संस्कारशाला की बालिकाओं की सहायता के लिए 23 दिसम्बर को यह कार्यक्रम आयोजित किया था।

कार्यक्रम में स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के वरिष्ठ अधिकारी-श्री महेश गोयल, सीजीएम (बिहार एवं झारखण्ड), महाप्रबन्धक श्री मिहिर नारायण मिश्रा, सहायक महाप्रबन्धक श्री दिनेश कुमार सिंह, युवा प्रकोष्ठ की ओर से प्रान्तीय प्रभारी श्री मनीष जी, श्री ज्ञानप्रकाश जी, निशांत जी कार्यक्रम में मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

जो व्यक्ति अपना सुधार स्वयं कर लेता है, वह लम्बी-चौड़ी बातें करने वाले निर्बल देशभक्तों के समूह से कहीं अधिक जनता का उपकार करता है। - लेबेटर

लोकसेवियों की जाग्रत् भाव संवेदनाओं से निहाल हो रही है मानवता

पीड़ित मानवता की सेवा कर मनाया वन्दनीया जीजी का जन्मदिन

कैंसर के रोगियों की विशाल धर्मशाला में तुलसी वृंदावन की स्थापना के साथ पीड़ितों का मनोबल बढ़ाने का प्रयास

गीता का साकार रूप हैं वन्दनीया शैल जीजी।
- **जतीन दवे, दिया मुम्बई**

मुम्बई। महाराष्ट्र

पुस्तकों के माध्यम से गीता को समझना कठिन हो सकता है, लेकिन वन्दनीया शैल जीजी के जीवन से इसे आसानी से सीखा जा सकता है। उनका जीवन योग, भक्ति, ज्ञान, कर्म का साकार रूप है। दुनिया को जिस शान्ति और सांत्वना की तलाश है वह श्रद्धेया जीजी के सान्निध्य में सहज ही प्राप्त हो जाते हैं। जीजी सारी दुनिया में आशा, ज्ञान, प्रेम, एकता, सद्भाव एवं शान्ति का प्रकाश फैला रही हैं।

गीता जयन्ती के अवसर पर दिया, मुम्बई के समन्वयक श्री जतिन दवे ने उपरोक्त संदेश संत गाडगे महाराज धर्मशाला, दादर में आयोजित तुलसी वृंदावन स्थापना के कार्यक्रम में दिया। गायत्री परिवार ने वहाँ संगमरमर के सुन्दर थांवले का निर्माण कराकर उसमें तुलसी रोपण किया है। धर्मशाला

संत गाडगे महाराज धर्मशाला, दादर में तुलसी वृंदावन की स्थापना

प्रबन्धक श्री प्रशान्त देशमुख, श्रीमती ममता शेट्टी एवं दिया के सदस्यों ने इसका अनावरण किया।

- यह कार्यक्रम दीपयज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्रोच्चारण से निर्मित दिव्य वातावरण में तुलसी वृंदावन का अनावरण किया गया।
- धर्मशाला में रह रहे लोगों में तुलसी के चमत्कारिक गुण, गीतामृत, गायत्री मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ एवं अन्य साहित्य निःशुल्क बाँटा गया।

संत गाडगे महाराज धर्मशाला में कैंसर के 600 मरीजों एवं उनके परिचारकों के ठहरने की सबसे सस्ती, सुन्दर व्यवस्था है। गायत्री परिवार सन् 2015 से ही वहाँ के मरीजों के लाभार्थ सामूहिक साधना, जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण, चिकित्सकीय सहयोग के कार्यक्रम धर्मशाला के प्रबन्धक श्री प्रशान्त देशमुख के सहयोग से कर रहा है।

वृक्ष-वनस्पति संरक्षण दिवस मनाया

हाजीपुर। बिहार

डिवाईन इंडिया सायंस एण्ड स्प्रिचुअल हैप्पीनेस एसोसिएशन (दिशा) ने 25 दिसम्बर 2020 का दिन 'वृक्ष-वनस्पति संरक्षण दिवस' के रूप में मनाया। महाराणा प्रताप कॉलोनी में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य अतिथि नेचर क्लब ऑफ इंडिया, पटना के मो.जावेद आलम ने तथा दिशा के संस्थापक सचिव आचार्य राजेश तिवारी ने जीवन में वृक्षों की महत्ता बताई। श्रीमती सविता तिवारी ने वृक्षों के आध्यात्मिक पक्ष और पं. उमेश तिवारी ने प्रमुख वनस्पतियों की उपयोगिता की चर्चा की।

कार्यक्रम के आरम्भ में दो भारत रत्न पं. मदनमोहन मालवीय तथा श्री अटल बिहारी वाजपेयी के चित्रों पर माल्यार्पण किया गया और गीता जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रतिदिन गीता पाठ की प्रेरणा दी गई।

उपस्थित सभी श्रद्धालुओं ने वृक्षारोपण के संकल्प लिए। कार्यक्रम में गायत्री परिवार हाजीपुर की अग्रणी भूमिका थी।

ठंड से बचाव के लिए ज़रूरतमंदों को आवश्यक वस्त्र उपलब्ध कराए

जतारा, टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

बढ़ती ढंग के साथ युवा प्रकोष्ठ जतारा के सदस्यों ने अपने नगर में एक शानदार पहल की। यह कार्य था घर-घर जाकर पुराने कपड़े एकत्रित करने, उन्हें व्यवस्थित करने और पैक कर ग़रीब बस्तियों, झुग्गी झोंपड़ियों तक पहुँचाने का। श्री मदन समेले के अनुसार इस कार्ययोजना के अन्तर्गत दिसम्बर माह तक ही उन्होंने 150 से 200 ज़रुरतमंद लोगों को ठंड से बचाव के लिए आवश्यक कपड़े उपलब्ध कराये थे। इस अभियान में श्री ओमप्रकाश दीक्षित, जालम प्रजापति, राकेश श्रीवास्तव, गोलू घोष, पीयूष कटारे प्रमुख रूप से सक्रिय रहे।

स्वास्थ्य केन्द्रों पर हर माह योग शिविर

टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

टीकमगढ़ जिले में गायत्री परिवार और स्वास्थ्य विभाग के समन्वय से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र चंदेरा, जरुआ, मोहनगढ, लिधौरा, दिगौड़ा जरुआ के चयनित शासकीय केन्द्रों पर संचालित आरोग्य केन्द्रों पर गायत्री परिवार के योग प्रशिक्षकों द्वारा हर माह 10 दिवसीय योग सत्र चलाये जा रहे हैं। माह दिसंबर से इस कार्यक्रम की शुरूआत हो चुकी है।

निःशुल्क चिकित्सा शिविर, 250 लोग लाभान्वित

कथारा, बोकारो। झारखण्ड

गायत्री ज्ञान मंदिर कथारा के द्वारा चतरो चट्टी पंचायत के कतवारी गाँव में 29 दिसम्बर 2020 को निःशुल्क होमियोपैथी स्वास्थ्य जाँच शिविर लगाया गया। होमियोपैथी चिकित्सक डॉ. डी. कुमार एवं दंत चिकित्सक डॉ. मनीष कुमार सिन्हा एवं डॉ. केशव कुमार प्रजापति जी ने इसके लिए अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। गाँव के 250 महिला एवं पुरुषों ने विभिन्न प्रकार के रोगों का इलाज करवाया।

कार्यक्रम अत्यंत प्रभावशाली रहा। चतरो चट्टी के मुखिया पति श्री महादेव महतो जी ने अपने क्षेत्र को अत्यंत गरीब और पिछड़ा बताते हुए गायत्री परिवार से ऐसे शिविर नियमित रूप से लगाने का आग्रह किया, जिसे परिजनों ने स्वीकार कर लिया। स्थानीय थाना प्रभारी श्री विवेक कुमार तिवारी एवं गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने शिविर में उपस्थित होकर उत्साहवर्धन किया। आठ जरूरतमंदों को नए कम्बल तथा सभी को सद्वाक्यों के स्टिकर दिए गए।

शिविर में मरीजों का इलाज करते चिकित्सक

छत्तीसगढ़ में प्रान्तीय युग गायन प्रतियोगिता सम्पन्न

छत्तीसगढ़ में युग गायन के क्षेत्र में प्रतिभाओं को तलाशने एवं तराशने का अभियान कई वर्षों से चल रहा है। इस वर्ष संक्रमण रोधी सावधानियों के बीच भी प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ द्वारा ऑनलाइन संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रान्तीय स्तर पर विजेताओं को प्रमाणपत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित भी किया गया।

कुल 390 प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह तीन वर्ग-पहला 18 वर्ष से कम (एकल), दूसरा 18 वर्ष से ऊपर (एकल) एवं तीसरा सामूहिक वर्ग सभी उम्र के प्रतिभागियों के लिए था। यह तीन चरण की प्रतियोगिता थी। पहला चरण जिला स्तरीय, दूसरा उप जोन स्तरीय तथा प्रांत स्तरीय था।

प्रतियोगिता की पूरी प्रक्रिया ऑनलाइन सम्पन्न हुई। ऑनलाइन फॉर्म भरे गए। हर स्तर पर प्रतिभागियों ने ऑनलाइन ही अपने वीडियो पोस्ट किये, जिन्हें देखकर तीन-तीन निर्णायकों के मूल्यांकन के आधार पर विजेताओं का चयन किया गया।

एकल वर्ग के विजेताओं को क्रमशः ₹3000/-, ₹2000/, ₹1000/- तथा सामूहिक वर्ग क्रमशः ₹5000/-, ₹3000/, ₹2000/- पुरस्कार राशि एवं

ऑनलाइन हुई प्रतियोगिता
तीन वर्गों में 390
प्रतिभागियों ने भाग लिया

प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की लोकप्रियता एवं सफल आयोजन में प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ के समन्वयक ओम प्रकाश राठौर, दौलत राम चौहान, रवि गुप्ता, निरंजना श्रीवास, भूपेंद्र भोय, सुरेंद्र गुप्ता, चम्पेश्वर साहू, पुरुषोत्तम यादव, टीकम राम साहू, भरत साहू, रामधीन यादव सहित सभी जिले के जिला समन्वयक एवं युवा प्रकोष्ठ के सदस्यों ने सराहनीय योगदान दिया।

प्रान्त स्तर पर विजेता

18 वर्ष से कम उम्र के एकल वर्ग में : प्रथम गरियाबंद जिला से लक्ष्मी साहू, द्वितीय बालोद जिला से नविका साहू, तृतीय दुर्ग से आरती यादव।

18 वर्ष से ऊपर एकल वर्ग में : प्रथम-कवर्धा जिले से भारती साहू, द्वितीय-सरगुजा जिले से अर्चना सिन्हा, तृतीय-कवर्धा जिले से छन्नू निर्मलकर।

सामूहिक वर्ग में : प्रथम-कांकेर जिला से जय मां भजन मंडली, द्वितीय-बिलासपुर जिला से जनक राम साहू समूह, तृतीय-बालोद से डॉ. गोपाल साहू युवा श्रीराम स्मृति मंडल मोहरा।

संजीवनी साधना सत्र का आयोजन

सीतापुर। उत्तर प्रदेश : 25 दिसम्बर को गायत्री चेतना केंद्र संत नगर सहसापुर का स्थापना दिवस था। नैष्ठिक परिजनों ने इस उपलक्ष्य में चेतना केन्द्र पर विशेष संजीवनी साधना सत्र का आयोजन करने का निश्चय किया। 15 दिसंबर को 9 दिवसीय साधना के लिए सामूहिक संकल्प कराया गया। कार्यक्रम में सर्वश्री गंगासागर वर्मा, अजय वर्मा और अनुराग मौर्य की टोली के साधनात्मक मनोभूमि निर्माण के गीत-संगीत एवं प्रेरणाएँ दीं।

इस अवसर पर गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर से पहुँचे निखिल भल्ला, क्षितिज भल्ला बंधुओं को कोरोना काल में की गई सराहनीय सेवाओं के लिए सम्मानित भी किया गया।

नैमिषारण्य में चल रहा है साधना एवं संस्कारों का नियमित क्रम

अस्थाई कुटीर एवं यज्ञशाला में है व्यवस्था

नैमिषारण्य, सीतापुर। उ. प्र.

प्राचीन चक्रतीर्थ नैमिषारण्य में अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा 'श्रीराम साधना आरण्यक' की स्थापना हो रही है। इस बीच वहाँ कुश की यज्ञशाला और टिनशेड में वैकल्पिक आवास की व्यवस्था कर साधना-संस्कार आदि गतिविधियाँ 31 मई 2020 से आरम्भ कर दी गई हैं। शान्तिकुञ्ज जैसी दिनचर्या के बीच वहाँ प्रमुख पर्वों के सामूहिक आयोजन एवं विभिन्न संस्कारों का क्रम नियमित रूप से चल रहा है। गायत्री परिवार के प्रति समर्पित परिजन ही नहीं, तीर्थयात्री भी गायत्री परिवार की गतिविधियों से बहुत प्रभावित हैं और इन कार्यक्रमों का लाभ ले रहे हैं। इस युगतीर्थ में विवाह संस्कार तक गायत्री परिवार द्वारा सम्पन्न कराए जा रहे हैं।

कोरोना संक्रमण से पूर्व वहाँ पाँच से नौ दिवसीय तीर्थसेवन सत्र एवं लघु गायत्री अनुष्ठान भी सम्पन्न कराए गए।

श्रीराम उपवन में 5000 वृक्षों का रोपण

पानी की टंकी के निर्माण के लिए भूमिपूजन हुआ

मंदसौर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार मन्दसौर द्वारा ग्राम कोलवा में ग्राम पंचायत एवं ग्रामीणों के सहयोग से 'श्रीराम उपवन' की स्थापना की गई है। इसमें 5000 पौधे रोपे जाने की योजना है। अब तक1500 विभिन्न प्रजाति के वृक्षों का रोपण यहाँ किया गया है, इन्हें पोषित-पल्लवित किया जा रहा है।

रोपित वृक्षों की सिंचाई के लिए श्रीराम उपवन में 25000 लीटर पानी की क्षमता वाली पानी की टंकी का निर्माण किया जा रहा है, जिसका भूमिपूजन भाजपा. के जिला उपाध्यक्ष श्री अनिल कियावत, ग्राम कोलवा सरपंच व गायत्री परिवार व ग्राम कोलवा-नीरधारी के परिजनों की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

ईश्वर को कल्पवृक्ष कहा गया है, पर कुछ पाने के लिए उसके निकट जाना और छाया में बैठना पड़ता है।

संकल्प के शिखर पर सफलता का ध्वज फहराया

ईश्वर प्रदत्त धन-सम्पदा का सदुपयोग

27500 घरों तक निःशुल्क पहुँच रहा है प्रज्ञा अभियान

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज ने मातृशक्ति श्रद्धाञ्जलि संकल्प के अन्तर्गत जन्मशताब्दी वर्ष-2026 तक प्रज्ञा अभियान के 1,00,000 (एक लाख) निःशुल्क सदस्य बनाने का संकल्प लिया है। यह संख्या क्रमशः बढ़ती जायेगी। गत दो वर्षों से उनके द्वारा 15000 बनाये जा रहे थे। इस वर्ष 24000 का संकल्प था, जो बढ़कर 27500 हो गया है। क्रमशः हर वर्ष संख्या 15000 बढ़ती जाएगी और 2026 में वह एक लाख हो जाएगी। इस वर्ष संलग्न बॉक्स में दिये गए नामों के सौजन्य से 1100 लोगों को 25-25 पाक्षिक निःशुल्क भेजे जा रहे हैं।

उल्लेखनीय बातें

- सौजन्यकर्त्ताओं का उद्देश्य पूरे देश में जनसंपर्क अभियान बढ़ाकर युगचेतना का विस्तार करना है।
- यह प्रज्ञा अभियान हर राज्य में भेजे जा रहे हैं, विशेषरूप से विकासमान क्षेत्रों में।
- इन्हें उन्हें ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से नए लोगों तक पहुँचाया जा रहा है।
- 200 केन्द्रीय एवं जिला कारागारों तथा उत्तर प्रदेश के 406 प्रज्ञा संस्थानों को भी भेजा जा रहा है।
- यह पूरी योजना जनसंपर्क पर आधारित है। सहयोग करने के आकांक्षी परिजन शान्तिकुञ्ज से 9258369413 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रयागराज 2400 के सौजन्यकर्त्ता

1. श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव, प्रयागराज (अपने माता-पिता की स्मृति में)
2. डॉ. सुनीत कुमार, एम.डी (रेडियोलॉजी), प्रज्ञा स्कैनिंग सेण्टर, प्रयागराज
3. इं. अभिनव मित्तल, प्रयागराज-Franchise of 'Ferns n Petals'
4. श्री वेद प्रकाश चैतन्य-जी.एम., ओएनजीसी, मुम्बई
5. इं. एल.बी. सिंह, (भूतपूर्व सूबेदार मेजर) आरडीएसओ लखनऊ,
6. श्री देवव्रत साहा राय, प्रयागराज (अपने माता-पिता की स्मृति में)
7. श्री हरेराम सिंह-एसबीआई, सुलेमसराय, प्रयागराज
8. श्री दिनेश कुमार-सहायक कुलसचिव, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी
9. श्री प्रवीण किशोर, सहायक प्रबन्धक एसबीआई, लाइफ इंश्योरेंस, प्रयागराज
10. श्री संजय कुमार गुप्ता, प्रयागराज (अपने माता-पिता की स्मृति में)
11. श्री अवधेश सिंह, प्रयागराज (अपने माता-पिता की स्मृति में)
12. श्री पवन कुमार द्विवेदी, सीटीओ, चंदौली
    (माता-पिता स्व. इंद्राणी एवं स्कॉड्रन लीडर गंगाधर द्विवेदी की स्मृति में)
13. श्रीमती ममता वर्मा, पटेल मार्केट, बाराबंकी
14. कु. शालिनी कांचकार, प्रयागराज (पिता स्व. सोमचंद्र कांचकार की स्मृति में)
15. प्रो. (श्रीमती) ऊषा श्रीवास्तव, कालिंदीपुरम, प्रयागराज
16. श्री जगदीश चंद्र जोशी, ओम गायत्री नगर, प्रयागराज
17. श्री त्रियुगी नारायण धर द्विवेदी, ए.जी. ऑफिस, प्रयागराज
18. प्रो. (डॉ.) विवेक श्रीवास्तव, कुलभाष्कर डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

विज्ञापन के इस युग में इस योजना के माध्यम से मिशन को शानदार गति दी जा सकती है। यदि अपनी ओर से 1000 सदस्य (₹60,000) बनाने वाले 15 सदस्य भी इकठ्ठे हो जायें तो उनके सौजन्य से उनके नाम या छोटी-सी विज्ञापन की पट्टी के साथ वर्षभर प्रज्ञा अभियान प्रकाशित छपवाये जा सकते हैं। मिशन की गरिमा का ध्यान रहे, अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-9258369413

प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ का वार्षिकोत्सव

चुनौतियों का डटकर सामना करने का आह्वान

पटना। बिहार

21 दिसम्बर 2020 के दिन गायत्री शक्तिपीठ कंकड़बाग पर प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ बिहार का 25वाँ वार्षिकोत्सव मनाया गया। अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख प्रतिनिधि श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने इसे वर्चुअली संबोधित करते हुए युवाओं से अपना दीपक खुद बनने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि युवा वह है जो दीपक जैसा प्रकाशवान जीवन जिए और दूसरों को भी सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे।

श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी ने भी सम्बोधित किया

प्रांतीय प्रकोष्ठ प्रभारी श्री मनीष कुमार ने कहा कि सही मायने में युवा वही है जो चुनौतियों का डटकर सामना करता है। यदि हम आज नहीं चेते तो हमारा देश पश्चिमी सभ्यता के दलदल में फँसता जाएगा। इस अवसर पर महेश गोयल, डॉ. अशोक कुमार, विजय शर्मा, ज्ञान प्रकाश आदि कई उत्साही एवं जिम्मेदार नवयुवकों ने भावी सक्रियता के संकल्प व्यक्त किए।

दीप प्रज्वलन के साथ वार्षिकोत्सव का शुभारंभ करते गणमान्य

गायत्री प्रज्ञापीठ, भिलाई का 39वाँ वार्षिक उत्सव

सैनिकों के मंगलमय जीवन की प्रार्थना भी की गई

भिलाई। छत्तीसगढ़

22 दिसम्बर को गायत्री प्रज्ञापीठ रामनगर मुक्तिधाम भिलाई का 39वाँ वार्षिक उत्सव सीमित साधकों की उपस्थिति में पूरे विधि-विधान एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्री मोहन उमरे ने प्रज्ञापीठ की विकास यात्रा एवं शक्तिपीठों की स्थापना के पीछे पूज्य गुरुदेव की अवधारणा का स्मरण कराया। एक दिवस पूर्व 12 घण्टे का जप हुआ, जिसमें संस्थान से जुड़े सभी भाई-बहिनों ने भाग लेते हुए अपनी भावाञ्जलि अर्पित की।

22 दिसम्बर को प्रातः एक कुण्डीय गायत्री यज्ञ में विश्व के कल्याण एवं विषम परिस्थितियों में भी देश की सुरक्षा में तैनात रहने वाले वीर जवानों के मंगलमय जीवन तथा उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए आहुतियाँ समर्पित की गई। उप जोन समन्वयक श्री एस.पी. सिंह एवं प्रज्ञापीठ के संरक्षक श्री भीमसेन सेतपाल सहित समस्त कार्यकर्त्ताओं ने अपने युगधर्म का स्मरण करते हुए उनके निष्ठापूर्वक निर्वाह के संकल्प लिए।

दीपयज्ञ के साथ मना श्रीमती गंगा देवी का 103वाँ जन्मदिन

श्री जे.पी. नड्डा, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष की माता हैं श्रीमती गंगा देवी

कुल्लू। हिमाचल प्रदेश

विश्व के सबसे बड़े राजनीतिक दल के अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी की माताजी श्रीमती गंगा देवी ने अपना 103वाँ जन्मदिन परम पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा और परम्परा के अनुसार दीपयज्ञ के साथ मनाया। उल्लेखनीय है कि वे उच्च कोटि की गायत्री साधिका हैं। उन्हीं की प्रेरणा से श्री जे.पी. नड्डा जी भी गायत्री परिवार के प्रति समर्पित हुए और गायत्री की दीक्षा ली, कई बार शान्तिकुञ्ज आए।

श्री नड्डा जी के करीबियों के हवाले से एक समाचार पत्र में प्रकाशित समाचार के अनुसार एक समय श्री नड्डा जी का राजनीतिक जीवन डाँवाडोल था। तब बुआ के आँचल की शीतल छाँव ने उन्हें दिशा दी। गायत्री उपासना के प्रभाव से उनकी किस्मत का द्वार खुला और फिर वे प्रगति के सोपान चढ़ते ही चले गए।

श्रीमती मल्लिका नड्डा ने बुआ माँ के जन्मदिन पर पूरे विधि-विधान के साथ दीपयज्ञ कराया। उन्होंने स्वयं माँ के माथे पर तिलक लगाकर उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घ जीवन की कामना माँ गायत्री से की। इस अवसर पर पार्टी के कई वरिष्ठ पदाधिकारी एवं परिवारी जन उपस्थित थे।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री सेवकराम साहू, खरसिया, रायगढ़। छत्तीसगढ़

ज्ञानयज्ञ के लिए समर्पित खरसिया के प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री सेवकराम साहू, सेवानिवृत्त ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी का 22 नवम्बर 2020 को 83 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। 500 घरों में अखण्ड ज्योति पत्रिका बाँटने, अपनी ओर से दुकान-ऑफिसों में युग निर्माण योजना पत्रिका निःशुल्क बाँटने, स्कूल-आँगनबाड़ियों में जाकर बाल संस्कारशालाएँ आरंभ करने जैसे कार्यों के लिए वे सदैव याद किए जायेंगे। उनके द्वारा ली गई मिशन की उन जिम्मेदारियों को अब उनके सुपुत्र श्री संतोष साहू सँभाल रहे हैं। उनकी बेटी श्रीमती संतोषी साहू एवं दामाद श्री चैनसिंह साहू शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में मिशन की सेवा कर रहे हैं।

श्रीमती ओम कुमारी छंगाणी, जोधपुर। राजस्थान

जोधपुर की निष्ठावान साधिका श्रीमती ओम कुमारी छंगाणी, धर्मपत्नी स्व. रवि प्रकाश छंगाणी की पार्थिव काया 22 नवंबर को पंच तत्वों में विलीन हो गई। वे 1978 से मिशन में सक्रिय थीं। वे राजस्थान में महिला जागरण अभियान का अहम हिस्सा रहीं व पाली, जालोर, जोधपुर जिलों में मिशन का भरपूर कार्य किया। उनकी तीनों संतानें धर्मेश, रमेश व हेमलता पुरोहित गुरुकर्यों में निष्ठापूर्वक सहयोग कर रहे हैं।

डॉ. नंदलाल यादव, कसरावद, खरगोन। मध्य प्रदेश

84 वर्षीय डॉ. नंदलाल यादव निमाड़ क्षेत्र के कर्मठ कार्यकर्ता थे। उन्होंने शान्तिकुञ्ज चिकित्सालय में दो वर्ष का समयदान भी दिया था। उनके सुपुत्र श्री प्रवीण यादव भी क्षेत्र में सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं। वे अश्वमेध यज्ञों के समय शान्तिकुञ्ज की टोलियों में जाते रहे हैं।

श्री गंगाराम केवट, शाजापुर। मध्य प्रदेश

ग्राम कालीसिंध निवासी 95 वर्षीय श्री गंगाराम केवट 22 दिसम्बर 2020 को पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए। शासकीय शिक्षक की सेवा से निवृत्त होने के बाद उन्होंने अपना जीवन पूर्ण रूप से मिशन के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने आजीवन पीले वस्त्र धारण किये। गाँव-गाँव साइकिल यात्राएँ एवं अखण्ड ज्योति वितरण का कार्य करते रहे। उनकी प्रेरणा से ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी बड़ी संख्या में भासंज्ञाप. में भाग लेते रहे हैं।

श्री विद्याधर कुम्भकार, रायगढ़। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार रायगढ़ के उप जिला समन्वयक श्री विद्याधर कुम्भकार का 23 दिसम्बर को निधन हो गया। वे निश्छल प्रेम और हँसमुख स्वभाव वाले लोकप्रिय कार्यकर्त्ता, यज्ञ-संस्कार के कुशल प्रशिक्षक थे।

म्यूज़िक थैरेपी का विस्मयकारी प्रभाव

30% फसल बढ़ी, गायों का दूध बढ़ा, कैंचुआ खाद का समय घटा

सागर। मध्य प्रदेश

संगीत का वृक्ष-वनस्पतियों, फसलों और बिना कान वाले जीव-जंतुओं पर भी आश्चर्यजनक सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह समाचार कई बार प्रकाशित होते रहते हैं। कोलकाता विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक जेसी बसु से लेकर रूस के वैज्ञानिकों ने तक संगीत के इस चमत्कारिक प्रभाव का अध्ययन किया और सच पाया है। इसी कड़ी में सागर के एक किसान का भी आश्चर्यचकित कर देने वाला समाचार प्रकाशित हुआ है।

दैनिक भास्कर में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार सागर से सटे गाँव तिली व कपूरिया में खेती करने वाले युवा किसान आकाश चौरसिया ने अपनी 12 एकड़ भूमि पर संगीत के कई प्रयोग किये और आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त किये हैं। वे पिछले पाँच वर्षों से यह प्रयोग कर रहे हैं और लगातार सफल हो रहे हैं। श्री आकाश चौरसिया ने अपनी 12 एकड़ भूमि पर म्यूज़िकल सिस्टम लगाया है। इससे फसलों, पेड़-पौधों, गायों और जीव-जन्तुओं को संगीत सुनाया जाता है। परिणाम स्वरूप -

- पहले एक एकड़ के खेत में 50 क्विंटल अदरक की फसल होती थी, वह अब 65 क्विंटल होने लगी।
- कैंचुओं को रातभर क्लासिकल इंस्ट्रुमेंटल धुन सुनाई जाती है। परिणाम स्वरूप 10 किलो कैंचुओं को 1 ट्रॉली गोबर को खाद बनाने में 90 दिन लगते थे, वह अब 60 दिन में ही तैयार हो जाती है।
- गायों को दुहने से पहले 15 मिनट गायत्री मंत्र सुनाया जाता है। इससे जो गायें पहले 4 लीटर दूध देती थीं, वे अब 5 लीटर दूध देने लगी हैं।

आकाश ने अपने म्यूज़िकल सिस्टम पर मात्र 10 हजार रुपये खर्च किए हैं, लेकिन उससे उन्हें लाखों रुपयों का फायदा हो रहा है।

महानताकी आकांक्षा करने से आत्मा की सर्वोत्कृष्ट शक्तियोंका विकास होता है, वे जाग्रत् होती हैं। - स्वेट मार्टिन

जयपुर से हुआ 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान का शुभारम्भ

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों के प्रवास से स्पष्ट हो रहा है अभियान का उद्देश्य और स्वरूप

जयपुर में (बायें से क्रमशः) - भावभरा स्वागत, आत्मीयता के अविस्मरणीय क्षण, घर-घर अमृत कलश एवं देवस्थापनाएँ तथा गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी पर संगोष्ठी

वीरभूमि राजस्थान को अश्वमेध यज्ञों से लेकर अपने मिशन के अनेक अभियानों का शुभारम्भ करने का श्रेय-सौभाग्य मिला है। उसी कड़ी में शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष के प्रथम चरण 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' के शुभारम्भ का सौभाग्य भी राजस्थान को ही मिला। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने जयपुर पहुँचकर इस अभियान का श्रीगणेश किया। डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रतिकुलपति देसंविवि, श्री परमानन्द द्विवेदी, श्री योगेन्द्र गिरी, डॉ. उमाकान्त इंदौलिया, श्री रामावतार पाटीदार की टोली इस पुनीत अभियान का शुभारम्भ करने जयपुर पहुँची थी।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों का राजस्थान एवं मध्य प्रदेश का यह प्रवास 16, 17 एवं 18 दिसम्बर 2020 की तिथियों में सम्पन्न हुआ। डॉ. चिन्मय जी की टोली ने जयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और नीमच में घर-घर जाकर शान्तिकुञ्ज एवं कुम्भ के प्रतीक 'गंगा-गायत्री' की स्थापना कराई। प्रवास के कार्यक्रम लीक से हटकर थे। कोविड-19 से बचाव के सभी दिशा-निर्देशों का पालन किया गया। बड़ी सभाएँ तो नहीं हुईं, लेकिन कार्यकर्त्ताओं पर प्रवास का असाधारण प्रभाव देखा गया। वस्तुतः यह प्रवास शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयन्ती वर्ष तथा 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' योजना के उद्देश्य और कार्यक्रम सम्बन्धी व्यावहारिक दिशा-मार्गदर्शन करने वाला था।

प्रान्तीय संकल्प

राजस्थान प्रान्त ने अपने प्रान्त में 70,000 घरों तक पहुँचने एवं अमृत कलश सेट की स्थापना करने का संकल्प लिया है। शक्तिपीठों के साथ वहाँ स्थापित नवचेतना विस्तार केन्द्र भी इस अभियान में महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाएँगे।

उद्देश्य एवं योजना

'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' की योजना आत्मीयता का विस्तार करने की योजना है। हम सब परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी द्वारा बनाए गए एक विराट परिवार के सदस्य हैं। यह एक ऐसा देव परिवार है जिसमें आदर्शों पर चलने की उमंग है, समाज के उत्थान के लिए एवं लोकमंगल के लिए समर्पित होने की हूक है। हम सब परस्पर प्रेम और आत्मीयता की पारिवारिक भावना से बँधे युगऋषि द्वारा युग परिवर्तन जैसे महान कार्य के लिए चुने गए मणिमुक्तक हैं। जैसे शान्तिकुञ्ज में आकर इन पारिवारिक भावनाओं को पोषण मिलता है, वैसा ही वातावरण पूरे देश और विश्व में बनाया जाना चाहिए। वर्तमान अवांछनीयताओं से जूझने के लिए देवात्माओं को संगठित एवं प्रेरित करना इसी प्रेम और आत्मीयता के सहारे संभव है।

भीलवाड़ा में हुईं देवस्थापनाएँ

एक ही विकल्प-सघन जनसंपर्क

शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष जाग्रत् आत्माओं को तलाशने, तराशने तथा उनकी सृजनात्मक सामर्थ्य का संगठित होकर सदुपयोग करने की प्रेरणा एवं कार्ययोजना लेकर आया है। यह कार्य सघन जनसम्पर्क से ही सम्भव है। डॉ. चिन्मय जी के राजस्थान-मध्य प्रदेश प्रवास की यही परोक्ष प्रेरणा रही।

डॉक्टर चिन्मय जी एवं उनकी टोली जयपुर के लगभग 24 तथा भीलवाड़ा-चित्तौड़गढ़ के ऐसे अनेक परिवारों के घर पहुँची, जिन्होंने मिशन को सींचने में अग्रदूतों की भूमिका निभाई। वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता उन्हें अपने बीच पाकर भावविभोर हो गये। अंतःकरण के आशीषों के पुष्प अर्पित कर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि का स्वागत किया। उनकी भावनाएँ ऐसी थीं जैसे शबरी के घर राम पधारे हों। शिथिल होते हाथों को जब शान्तिकुञ्ज का सहारा मिला तो वे ही नहीं, परिवार के सभी सदस्य गद्गद हो गए। सभी के घर कुम्भ के अमृत कलश, गायत्री माता के चित्र, साहित्य आदि की स्थापना की गई। परिवारी जनों को नित्य गायत्री उपासना करने के लिए प्रेरित किया। अमृत कलश से गंगाजल की कुछ बूँदें स्नान के जल में मिलाकर कुम्भ स्नान का भाव बनाने की प्रेरणा दी।

कुछ विशिष्ट प्रसंग

- विगत दिनों दिवंगत हुए मिशन के भामाशाह श्री वीरेन्द्र अग्रवाल के घर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि पहुँचे। परिवारी जनों के साथ मिलकर उनकी आत्मा के कल्याण की प्रार्थना की। परिवारी जनों की कुशलक्षेम पूछी एवं उनके द्वारा किए जा रहे मिशन के कार्यों की जानकारी ली, उत्साह बढ़ाया।
- गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी पर लगभग 70 से 100 प्रमुख कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। उनके बीच संक्षिप्त उद्बोधन हुआ।
- जयपुर की आलीशान मानसरोवर कॉलोनी में मिशन द्वारा प्राप्त विशाल भूखण्ड का अवलोकन किया। वहाँ की भावी योजनाओं की जानकारी ली।
- भीलवाड़ा में गायत्री शक्तिपीठ पर गोष्ठी हुई तथा गायत्री ज्ञान मंदिर का अवलोकन किया।
- राजस्थान प्रवास में डॉ. प्रशान्त भारद्वाज एवं जोन समन्वयक श्री घनश्याम पालीवाल टोली के साथ रहे।

शान्तिकुञ्ज में भी

कोविड-19 के अनलॉक के चरणों में डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा आत्मीयता विस्तार का यह प्रेरणादायी क्रम शान्तिकुञ्ज में भी चलाया गया, जिससे अंतेवासी कार्यकर्त्ता अत्यंत प्रभावित हुए। उन्होंने घर-घर जाकर बुजुर्गों-अशक्तों की कुशलक्षेम जानी, जो कुछ संभव हो सका, उनका सहयोग किया। उनके इस अभियान ने युवाओं में नए उत्साह का संचार किया।

शान्तिकुञ्ज में आत्मीयता विस्तार का यह क्रम सामूहिक स्वच्छता, श्रमदान, रात्रि सुरक्षा जैसे कार्यक्रमों से निरन्तर चल रहा है, बढ़ रहा है। इन कार्यक्रमों से कार्यकर्त्ताओं में परस्पर सहयोग और सक्रियता का भाव बढ़ रहा है।

डॉ. चिन्मय जी स्व. श्री वीरेन्द्र जी के परिवार के बीच

डॉ. चिन्मय जी के नीमच एवं मध्य प्रदेश के अगले प्रवास (27 से 29 दिसम्बर 2020) के समाचार अगले अंक में

पूरे देश में आयोजित हो रही हैं संकल्प गोष्ठियाँ

'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' अभियान को लेकर पूरे देश में जबरदस्त उत्साह है। दिसम्बर माह में लगभग हर क्षेत्र में संकल्प गोष्ठियाँ अयोजित हुईं, जिनमें योजना की विस्तृत जानकारियाँ सभी कार्यकर्त्ताओं के साथ साझा की गईं। अपने क्षेत्र की योजनाएँ बनाई गईं और संकल्प लिए गए।

मध्य प्रदेश में 1,32,000

मध्य प्रदेश के प्रान्तीय संगठन ने भोपाल में आयोजित एक गोष्ठी में पूरे प्रदेश में 1,32,000 घरों में 'गंगा अमृत कलश' स्थापना का संकल्प लिया। 25000 स्थापनाएँ राजधानी भोपाल में ही किए जाने का निर्णय लिया गया।

खण्डवा जिले में 12,000 कलशों की स्थापना की योजना बनाई जा रही है। इसके लिए पूरे जिले को सात खण्डों में विभाजित कर योजना बनाई गई और कार्यकर्त्ताओं को ज़िम्मेदारियाँ सौंपी गईं।

छिन्दवाड़ा में हुए कार्यकर्त्ता संगोष्ठी के अनुसार विकास खंड के तीन केन्द्र खुनाझिरकला, रोहना कला, कुंडालिकला 30-30 गाँव में पहुँचकर लगभग 1100 घरों में गंगा अमृत कलश की स्थापना कराएँगे।

नरसिंहपुर में शक्तिपीठ पर आयोजित गोष्ठी में नरसिंहपुर के 528, तेंदूखेड़ा के 648, गाडरवारा के 251, करेली के 202, चिनकी के 132 और बरमान के 120; इस प्रकार कुल 1881 घरों में कुम्भ स्थापना के संकल्प लिए गए हैं।

छत्तीसगढ़ में

महासमुन्द में गायत्री मंदिर पर आयोजित गोष्ठी में ब्लॉक को 17 इकाइयों में बाँटकर हर गाँव में गंगा अमृत कलश की स्थापना की योजना बनाई गई। प्रत्येक इकाई को 10 से 15 गाँवों की जिम्मेदारी सौंपकर हर गाँव में प्रज्ञा मण्डल, महिला मण्डल, युवा मण्डलों की स्थापना का लक्ष्य दिया गया है।

विल्हाटी, बिलासपुर स्थित देव संस्कृति विद्यालय में आयोजित विचार गोष्ठी में दक्षिण पूर्वी जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री शुकदेव निर्मलकर ने पूरी योजना की जानकारी दी। संगोष्ठी में उन्होंने विजन-2026 को लेकर चर्चा की। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी की परिकल्पना के अनुरूप देव संस्कृति विद्यालय, चिल्हाटी को युग निर्माण विद्यालय के रूप में विकसित करने सम्बन्धी दिशा-निर्देश दिये।

वाराणसी, उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ दानूपुर, वाराणसी पर हुई गोष्ठी में श्री सुरेश चंद्र यादव ने समग्र कार्ययोजना समझाई। कार्यकर्त्ताओं ने प्रत्येक ब्लॉक के पाँच-पाँच गाँवों एवं ऋषि क्षेत्रों के 24-24 घरों में कुम्भ का संदेश पहुँचाने का संकल्प लिया। काशी विद्यापीठ ब्लॉक से श्री ओम कुमार, चिरईगाँव से कैलाशपति मौर्या, चोलापुर ब्लॉक से रामजीत यादव, पिण्डरा से लालबहादुर पटेल, सेवापुरी से रामाश्रय सिंह, आराजी लाइन से कल्लन प्रसाद एवं पड़ाव से डॉ. भगवानदास संकल्प लेने वालों में प्रमुख हैं। कार्यक्रम का संयोजन श्री गंगाधर उपाध्याय ने किया।

शक्तिपीठों पर आयोजित संकल्प गोष्ठियाँ

विश्व स्तरीय 40 दिवसीय साधना अनुष्ठान

वसंत पर्व (16 फरवरी 2021) से फाल्गुन पूर्णिमा (28 मार्च 2021) तक

इन दिनों परम वन्दनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष-2021 को लक्ष्य कर नौ वर्षीय मातृशक्ति श्रद्धांजलि नवसृजन महापुरश्चरण साधना चल रही है। इसके अन्तर्गत हर वर्ष वसन्त पर्व से श्रावणी पूर्णिमा तक वसंत पर्व से फाल्गुनी पूर्णिमा तक का 40 दिवसीय सामूहिक साधना क्रम चलता है। यह सामूहिक साधना युग परिवर्तन के चक्र को तीव्र गति देने और युगऋषि के 'मनुष्य में देवत्व का उदय एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण' संकल्प शीघ्र साकार करने हेतु उपयुक्त वातावरण बनाने के लिए की जा रही है।

यह वर्ष शान्तिकुञ्ज का स्वर्ण जयन्ती वर्ष होने के कारण विशेष है। इन्हीं दिनों हरिद्वार में हो रहे कुम्भ की प्राण ऊर्जा को घर-घर पहुँचाने का भी हमारा संकल्प है। इस वर्ष लगभग 51,000 साधकों के इसमें शामिल होने का अनुमान है।

साधकों को यह चालीस दिवसीय साधना अपने घर पर रहकर ही संपन्न करनी है । इस के लिए शांतिकुंज नहीं आना होगा । पंजीयन करने का उद्देश्य सभी साधकों की सूचना एकत्र करना एवं शांतिकुंज स्तर पर दोष परिमार्जन - संरक्षण एवं मार्गदर्शन की व्यवस्था करनी है ।

शंका समाधान हेतु शान्तिकुन्ज से पत्र अथवा मेल से सम्पर्क करें ।
निवेदक - युगतीर्थ, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार।
पंजीयन : www.awgp.org , www.diya.net.in
Email : youthcell@awgp.org shantikunj@awgp.org
WhatsApp: 9258360962, 9258360600
Mobile: 9258360652, 9258360600

परिव्राजक प्रशिक्षण सत्र प्रारम्भ हो रहे हैं

समयदान दें, युगधर्म निभायें

शान्तिकुञ्ज में एक मासीय 'परिव्राजक प्रशिक्षण सत्र' 01 मार्च 2021 से पुनः प्रारम्भ किए जा रहे हैं, जो हर माह चलेंगे। इनमें प्रतिभागियों की संख्या सीमित ही रहेगी। जो पूर्णरूपेण स्वस्थ होकर सत्र के तुरन्त बाद घर से दूर रहकर कम से कम तीन माह समयदान करने की स्थिति में हों, वे इनमें भाग ले सकते हैं। साथ ही वे स्वस्थ परिजन भी आवेदन कर सकते हैं -

- जो पूर्व में परिव्राजक प्रशिक्षण प्राप्त कर शक्तिपीठों पर समयदान कर चुके हैं और अब समयदान करना चाहते हैं। **या**
- जो पूर्व में एक मासीय युगशिल्पी प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके हैं। **या**
- जो पूर्व में परिव्राजक प्रशिक्षण सत्र करने के बाद समयदान नहीं कर सकें।

इच्छुक समयदानी परिजन कृपया, निम्नांकित Email या डाक द्वारा अपना व पिता/पति का नाम, विवाहित हैं या अविवाहित, पत्र व्यवहार का पूर्ण पता, उम्र, शिक्षा, व्यवसाय, Email id, नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र व युगशिल्पी सत्र करने का माह व वर्ष, मोबाइल एवं व्हॉट्सएप नम्बर, पूर्व में किए गए समयदान की जानकारी, यदि सपत्नीक शिविर में आते हैं तो उनका नाम, उम्र व शिक्षा एवं किस माह में शिविर करना चाहते हैं, लिखकर आवेदन प्रेषित करें। इस विषय में कोई परामर्श करना हो तो निम्नांकित मोबाईल नम्बर से प्रातः 10 से 05 बजे के मध्य सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रतिभागियों की संख्या सीमित है। अतः पूर्व अनुमति प्राप्त होने के बाद ही शान्तिकुञ्ज आने हेतु व्यवस्था बनाएँ।

निवेदक : शक्तिपीठ संगठन कार्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
मो.नं.-9258360694 Email-shaktipeeth@awgp.org
व्हॉट्सएप. नं. 8439014125

विशेष निवेदन : इस अंक का सम्पादकीय पृष्ठ (2) पढ़ें। जिनकी ज़िम्मेदारियाँ एवं आवश्यकताएँ थोड़ी कम हो गई हैं, ऐसे लोग मिशन की सेवा के लिए ज़रूर आगे आएँ। आवश्यक प्रशिक्षण के लिए वे प्रारम्भिक संजीवनी साधना सत्र, युगशिल्पी सत्र (अभी ये दोनों शिविर कोरोना प्रोटोकॉल को ध्यान में रखते हुए शान्तिकुञ्ज में नहीं चल रहे हैं, जब चलेंगे तो सूचना दी जाएगी।) तथा एक मासीय परिव्राजक प्रशिक्षण सत्र में भाग लेने के लिए आवेदन कर सकते हैं।

अंतर्मन में निहित सृजनात्मकता

रावतभाटा, चित्तौड़गढ़। राजस्थान

रावतभाटा में परमाणु वैज्ञानिक श्री दिलीप भाटिया बाल संस्कार शाला चलाते हैं। वे बच्चों को निरन्तर प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं प्रशिक्षण देते हैं। उनके संपर्क में रहने वाली छः वर्षीया लिली यादव ने अपने पापा द्वारा कूड़ेदान में फेंक दिए सर्फ एक्सेल वाशिंग पाउडर के खाली कार्टन को देखा तो उसके भीतर का कलाकार जाग गया। उसने क्राफ्ट पेपर टेप, फेविकॉल, स्केच पेन की सहायता से उस कार्टन से खिलौने रखने का डिब्बा बना लिया। आवश्यकता बच्चों में निहित ऐसी प्रतिभा को निखारने की है।

अपने बनाए टॉय बॉक्स के साथ नन्हीं लिली

आओ जानें विश्वविद्यालय अपना

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

लक्ष्य : सांस्कृतिक चेतना का पुनर्जीवन, स्वावलम्बी, समाजनिष्ठ व्यक्तित्वों का निर्माण
विरासत : युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का तप और क्रान्तिकारी विचारधारा
विशेषताएँ : रोजगारपरक शिक्षा के साथ विद्यार्थियों का समग्र उत्कर्ष

- विश्व के 60 से अधिक शैक्षणिक एवं शोध संस्थानों के साथ पारस्परिक सहयोग हेतु अन्तर्राष्ट्रीय अनुबन्ध
- यूरोप की प्रतिष्ठित इरास्मस प्लस स्कॉलरशिप से जुड़ा भारत का एकमात्र संस्थान
- एसोसिएशन ऑफ कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटी का प्रतिष्ठित सदस्य
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक विकास हेतु कार्य करने कार्य करने हेतु यूनेस्को चेअर
- यूनाइटेड नेशन्स ऑर्गेनाइज़ेशन में वर्ल्ड पीस चार्टर निर्माण हेतु प्रतिनिधित्व
- वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइज़ेशन द्वारा नामित योग एक्सपर्ट विश्वविद्यालय

ग्राम प्रबन्धन के क्षेत्र में व्यवसाय (कैरियर) की अथाह संभावनाएँ

भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की 70 प्रतिशत आबादी गाँवों में बसती है। देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में गाँवों की भागीदारी 50 प्रतिशत है। इसके बावजूद शताब्दियों से उपेक्षा का दंश झेल रहे गाँवों का सही विकास स्वतंत्रता के 73 वर्षों के बाद भी नहीं हो पाया है। गाँव की अशिक्षा, बेरोज़गारी, वहाँ से हो रहा पलायन गंभीर चिंता का विषय है। जब तक ग्राम विकास की सही योजनाएँ नहीं बनतीं, ग्रामवासी संगठित होकर एक समाज की भावना के साथ सोचना आरम्भ नहीं करते, तब तक गाँवों का सही मायने में उत्थान संभव नहीं हो पाएगा।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय ने इस दिशा में क्रान्तिकारी पहल की है। ग्रामीणों को रोज़गार उपलब्ध कराने से लेकर गाँवों के संसाधनों के बेहतर उपयोग तक के क्षेत्र पर यहाँ काम किया जा रहा है। इसके लिए अलग से 'ग्राम प्रबन्धन संकाय' बनाया गया है। यह संकाय स्वावलम्बन प्रशिक्षण के साथ पेशेवर ग्राम प्रबंधक (रूरल मैनेजमेण्ट प्रोफेशनल्स) तैयार कर रहा है। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के ग्राम प्रबन्धन संकाय द्वारा इसके लिए कई तरह के पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। ग्राम प्रबन्धन आज का युगधर्म भी है और यह व्यावसायिक दृष्टि से भी अनन्त संभावनाओं से भरापूरा क्षेत्र है। राष्ट्रोत्थान के नैतिक दायित्वों को निभाने की हूक से लेकर अनन्त व्यावसायिक संभावनाओं को देखते हुए ग्राम प्रबन्धन का यह क्षेत्र नौजवानों को खूब आकर्षित कर रहा है।

- देव संस्कृति विश्वविद्यालय में ग्राम प्रबन्धन सम्बन्धी एक माह, डेढ़ माह, छह माह व एक वर्ष के पाठ्यक्रम।
- विभिन्न राज्यों में 45 रचनात्मक केन्द्र स्थापित किए गए हैं।
- 80 गोशालाओं का संचालन, गौ-उत्पाद निर्माण का प्रशिक्षण।
- गाँवों में जाकर 5 से 6 दिन के प्रशिक्षण सत्र।
- जैम, कैंडी, मुरब्बा, च्यवनप्राश, अचार, साबुन, डिटर्जेंट, धूपबत्ती, अगरबत्ती, मोमबत्ती, कागज, ग्रीटिंग कार्ड, फाइल कागज, बेकरी उत्पादों में रस्क, बिस्किट, केक, पेस्ट्री आदि बनाने का प्रशिक्षण।
- मधुमक्खी पालन, गौ उत्पाद जैसे अर्क, हरड़ चूर्ण, गौमूत्र आसव, कामधेनु नारी संजीवनी आदि बनाना सिखाया जाता है।
- अगले दिनों ग्रामीण फूड प्रोससिंग के अंतर्गत बड़ी, पापड़, मूँगफली, सत्तू का उत्पादन शामिल है। पत्ता आधारित उत्पाद में पत्तल, दोना एवं प्लेट बनाने का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

परम पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद से धर्म-अध्यात्म के क्षेत्र में पत्रकारिता को नई दिशा देने वाले 'श्री ज्योतिर्मय' पंचतत्त्व में विलीन हुए

सन् 1968 के आसपास की बात है। परम पूज्य गुरुदेव आगर मालवा के प्रवास पर थे। वहाँ उन्होंने एक 16 वर्षीय किशोर को उसके भीतर निहित संभावनाओं से परिचित कराया और अपने साथ रखने के लिए कहा। उस किशोर का नाम था रमेश।

रमेश वह सौभाग्यशाली आत्मा थी, जिसने अपने को पूज्य गुरुदेव के हाथों सौंप दिया और गुरुसत्ता ने उसे लेखन के क्षेत्र में ऐसा गढ़ा कि जिसने पत्रकारिता के क्षेत्र में अमिट छाप छोड़ी। परम पूज्य गुरुदेव ने ही उन्हें नया नाम 'ज्योतिर्मय' दिया था। धर्म-अध्यात्म के क्षेत्र में दुनिया को प्रगतिशील दिशा देने वाले युगऋषि के कृपा पात्र ज्योतिर्मय जी 73 वर्ष की अवस्था में गीता जयंती-मोक्ष एकादशी (25 दिसम्बर 2020) के दिन ब्रह्ममुहूर्त में अपनी पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए। मथुरा में रहे हों, शान्तिकुञ्ज में या फिर बाहर दिल्ली में, वे अपनी लेखनी से आजीवन युगऋषि के विचारों के अनुरूप धर्म चेतना के जागरण में अद्वितीय योगदान देते रहे। उनका निधन इस मिशन के लिए अपूरणीय क्षति है।

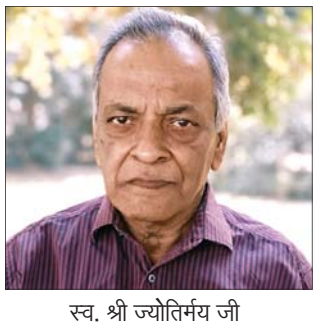

स्व. श्री ज्योतिर्मय जी

मिशन की प्रत्यक्ष सेवाएँ

श्री ज्योतिर्मय ने तपोभूमि, मथुरा में लगभग तीन वर्ष और शान्तिकुञ्ज में लगभग सात वर्षों तक समयदानी कार्यकर्त्ता के रूप में सपरिवार रहे। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव से लेखन कला सीखी और युग निर्माण योजना तथा अखण्ड ज्योति पत्रिकाओं के लिए लेख लिखे।

पत्रकारिता के क्षेत्र में

परम पूज्य गुरुदेव ने उनके मिशन को पूरी दुनिया में फैलाने का आशीर्वाद दिया था। अतः वे शान्तिकुञ्ज में रहते हुए ही दिल्ली प्रेस से प्रकाशित सुप्रसिद्ध पत्रिका 'सरिता' के लिए धर्म-अध्यात्म परक लेख भेजते रहे।

सन् 1983 में दैनिक जनसत्ता ने 'धर्म-संस्कृति' का सम्पादक बनाया। उनके लेखों के कारण नई तरह की पत्रकारिता आरंभ हुई, जिसमें तथ्य एवं शोधपरक लेखों को प्रधानता दी जाने लगी। आज की धर्म-अध्यात्मपरक पत्रकारिता पर उनकी शैली का गहरा प्रभाव है। आगे चलकर उन्होंने 'नई दुनिया' के लिए काम किया। पिछले 6-7 वर्षों से वे 'अमर उजाला' से जुड़े थे।

श्रद्धेय डॉ. साहब - जीजी की श्रद्धाञ्जलि

स्व. श्री ज्योतिर्मय जी लेखन के क्षेत्र में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी के बहुत अच्छे सहयोगी थे। वे श्रद्धेय के निर्देशन-मार्गदर्शन में ही **'चेतना की शिखर यात्रा'** ग्रंथ के तीन खण्डों की रचना में प्रमुख सहयोगी रहे। श्रद्धेय डॉ. साहब, जीजी ने उन्हें श्रद्धाञ्जलि देते हुए उनके निधन को मिशन की अपूरणीय क्षति बताया। दिवंगत आत्मा को शान्ति, सद्गति तथा धर्मपत्नी एवं बेटे विवेक को इस आघात को सहने की शक्ति मिले ऐसी प्रार्थना गुरुसत्ता से की।

गीता के अध्ययन से जीवन में स्थिरता आती है।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलाधिपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय

श्रीमद्भगवद्गीता मॉडर्न साइकोलॉजी की गाइड बुक है। अपनी प्रतिभा और क्षमताओं को कैसे बढ़ाया जाय? यह गीता हमें सिखाती है। गीता जीवन जीने की कला सिखाती है। जैसे-जैसे व्यक्ति गीता के कर्मयोग को समझकर उसे जीवन में धारण करता जाता है, वैसे-वैसे उसके जीवन में स्थिरता आती जाती है। वह निष्काम भाव से अपने कर्म करते हुए दुनिया के प्रचण्ड झंझावातों के बीच भी शान्त, सन्तुलित एवं संयमित होकर आनन्दमय जीवन जीता है।

समर्पण की प्रेरणा

यह संदेश है श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का जो उन्होंने गीता जयन्ती (25 दिसम्बर 2020) के दिन दिया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय परिवार को निरन्तर गीता-ज्ञान देने वाले कुलाधिपति जी ने कहा कि जीवन में समर्पण का बहुत महत्त्व है। जिस दिन से हम किसी महापुरुष को शिष्य भाव से अपना गुरु मान लेते हैं, उसी दिन से जीवन में क्रान्ति आने लगती है।

अंतःकरण मजबूत बनाओ

गीता हमें अपने अंतःकरण को मज़बूत करने की प्रेरणा देती है। मन ही मन का मित्र है और मन ही मन का शत्रु है। अंतःकरण मजबूत होगा तो मार्गदर्शन भीतर से ही मिलने लगेगा।

गायत्री विद्यापीठ के बच्चे अपनी भावना को चित्रों में पिरोकर भेंट करते हुए, दायें-पंचतत्त्व के प्रतीक कलशों का पूजन, टेबल कैलेण्डर का विमाचन

श्रद्धेया शैल जीजी के जन्मदिन पर लाखों परिजनों ने दीं शुभकामनाएँ

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की वरासत को अपने प्रेम, करुणा, ममता से सतत सींचते हुए गायत्री परिवार के करोड़ों लोगों का पथ प्रदर्शन कर रहीं श्रद्धेया शैल जीजी का 68वाँ जन्मदिन बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रचण्ड प्रतिकूलताओं में भी चट्टान की तरह अडिग रहकर मिशन का कुशल नेतृत्व कर रहीं, गीता जयन्ती के दिन अवतरित श्रद्धेया शैल जीजी वस्तुतः योगेश्वर की जीती-जागती प्रतिमा ही हैं, जिनके दर्शन से हृदय सहज ही खिल उठता है। उनका जन्मदिन शान्तिकुञ्ज के साथ-साथ देश-विदेश की सैकड़ों शाखाओं द्वारा मनाया गया। लाखों श्रद्धालुओं ने सोशल मीडिया के माध्यम से उनके स्वस्थ एवं ओजस्वी-तेजस्वी जीवन तथा उज्ज्वल भविष्य की कामनाएँ की हैं।

शुभेच्छक गणमान्य

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय भाई रूपाणी, प्रख्यात संत गोविन्दगिरी जी महाराज, प्रसिद्ध कथावाचक सुधांशु महाराज, स्वामी चिन्दानंद मुनि सहित राजनीति एवं अध्यात्म क्षेत्र के अनेक ख्यातिलब्ध हस्ताक्षरों ने अपनी शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर कनाडा, अमेरिका, लंदन, श्रीलंका, मलेशिया, इंग्लैण्ड आदि देशों के परिजनों ने भी अपने शुभकामना संदेश भेजे।

गीता जयन्ती पर सायंकाल दीपयज्ञ की मनोरम छटा

श्रद्धेया जीजी का जन्मदिन अपने मिशन की परम्पराओं के अनुरूप प्रातःकाल दीपयज्ञ के साथ मनाया गया। इस अवसर पर उन्होंने पंचतत्त्वों के प्रतीक पाँच कलशों का पूजन किया। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने मंगल तिलक एवं प्रथम पुष्पोपहार भेंट कर अपनी शुभकामना-आशीर्वाद दिये। इस अवसर पर व्यवस्थापक श्री महेन्द्र कुमार शर्मा एवं अन्य गणमान्य उपस्थित थे। तत्पश्चात् शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान परिवार ने पंक्तिबद्ध होकर अपने भाव सुमन पुष्पगुच्छ, कविताएँ, स्मरणीय फोटोग्राफ्स आदि भेंट करते हुए व्यक्ति किये।

गीता जयन्ती के उपलक्ष्य में दीपयज्ञ

सायंकाल गीता जयंती पर्व बड़े मनोरम दीपयज्ञ के साथ मनाया गया। इस अवसर पर सभी अंतेवासियों ने अपने-अपने घर से दीप लाकर ऋषियुग्म के स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा', गायत्री माता मंदिर एवं पूरे शान्तिकुञ्ज को दीपमालिकाओं से सजाया गया था।

श्री श्याम बिहारी दुबे की युगपुरोहित एवं युगगायकों की टोली ने गायत्री मंदिर के समक्ष दीपयज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर गीतापाठ, संकीर्तन भी हुए। व्यवस्थापक श्री महेन्द्र कुमार शर्मा ने दीपयज्ञ में भाग ले रहे अंतेवासियों को संबोधित करते हुए गीता के कर्मयोग को जीवन में अपनाते हुए श्रद्धेया जीजी, श्रद्धेय डॉक्टर साहब के मार्गदर्शन में ऋषियुग्म के अभियान को निरन्तर आगे बढ़ाते रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि युगऋषि के संकल्पों को उनके आदर्शों को जीवन में अपनाकर ही साकार किय जा सकता है।

प्रज्ञावतार लीलामृत (प्रबन्ध काव्य) एवं टेबल कैलेण्डर का विमाचन

गीता जयंती के पावन अवसर पर मिशन के प्रतिष्ठित कवि श्री शचीन्द्र भटनागर द्वारा रचित प्रबन्ध काव्य 'प्रज्ञावतार लीलामृत' का विमोचन श्रद्धेय द्वय ने किया। इस असाधारण रचना के लिए श्रद्धेया जीजी-डॉ. साहब ने कवि श्री भटनागर जी को 'युगसृजन अभियान के क्रांतदर्शी कवि' की उपाधि से सम्मानित किया, यद्यपि वे स्वयं स्वास्थ्य कारणों से उपस्थित नहीं थे। नए टेबल कैलेण्डर का भी विमोचन हुआ।

वर्ष 2021 का स्वागत

मन, वचन और कर्म में शुद्धि तथा प्रखरता के लिए गुरुसत्ता से लिया आशीर्वाद

वर्ष 2021 के प्रथम दिन शान्तिकुञ्ज में पहले जैसी रौनक फिर से लौटती दिखाई दी। यद्यपि कोविड-19 संक्रमण का संकट अभी टला नहीं है, फिर भी उससे बचाव के लिए आवश्यक सभी सावधानियों का पालन करते हुए आसपास ही नहीं, देश के कई भागों से कार्यकर्त्ता शान्तिकुञ्ज पधारे थे। सीमित संख्या में लोगों को आने की अनुमति दी गई थी, फिर भी स्वजनों को अपने बीच पाकर शान्तिकुञ्ज बहुत उत्साहित था। कड़ाके की ठंड और घने कोहरे के बीच चैतन्य सिद्ध क्षेत्र में साधकों की चहल-पहल आनन्ददायक थी। वहीं अतिथिगण भी गुरुस्मारक, अखण्ड दीप, गायत्री माता मंदिर पर प्रणाम करते हुए यहाँ की दिव्यता से ओतप्रोत होकर अभिभूत दिखाई दिए।

अंग्रेजी नववर्ष के स्वागत का दुनियाँ में अपना ही ढंग है। लेकिन भारतीय संस्कृति केवल मौज-मस्ती नहीं, जीवन को श्रेष्ठ बनाने की प्रार्थना और प्रयासों के साथ नवीनता का स्वागत करता है।

नववर्ष के अवसर पर अखण्ड दीप दर्शन के साथ ही श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब से आशीर्वाद, शुभकामनाएँ ग्रहण करने का क्रम सदैव की भाँति चलता रहा। उनके प्रेम और भाव-संवेदनाओं का स्पर्श अत्यंत आनन्ददायी था। चित्र में शान्तिकुञ्ज के बुजुर्ग कार्यकर्त्ता आदरणीय श्री शिवप्रसाद मिश्रा जी श्रद्धेय डॉक्टर साहब एवं श्रद्धेया शैल जीजी से शुभकामनाएँ प्राप्त करते हुए।

शान्तिकुञ्ज में अंग्रजी कैलेण्डर के नववर्ष 2021 का स्वागत ऐसी ही श्रेष्ठ परम्पराओं के साथ हुआ। परिजनों ने जप, ध्यान, यज्ञ, देवदर्शन आदि कार्यक्रमों में भाग लिया। इस अवसर पर परम पूज्य गुरुदेव की प्रेरणाओं को हृदयंगम करते हुए जीवन को सन्मार्ग की ओर ले जाने के भाव-संकल्प उभरते रहे। मन, वचन, कर्म शुद्ध होते रहें, जीवन में लोकमंगल के लिए उत्साह एवं सक्रियता निरन्तर बढ़ते रहें, इसी आशीर्वाद की कामना और प्रार्थना साधकों ने की। पारिवारिक परम्परा के अनुरूप सामूहिक भोजन-प्रसाद की व्यवस्था की गई थी।

शान्तिकुञ्ज द्वारा सप्तऋषि क्षेत्र एवं भूपतवाला क्षेत्र में 500 से अधिक कम्बल बाँटे गए

इन दिनों पूरा उत्तर भारत प्रचण्ड ठंड की चपेट में है। न जाने कितने लोग सर्दी का सितम झेलने को विवश हैं। शान्तिकुञ्ज पीड़ित एवं ज़रूरतमंद मानवता की सेवा में सदैव अग्रणी रहा है और इन दिनों भी ठंड से ठिठुरते लोगों की हर सम्भव सहायता करने का प्रयास कर रहा है। इन परिस्थितियों में शान्तिकुञ्ज की आपदा प्रबन्धन वाहिनी रात 9 बजे से लेकर 1 बजे तक सप्तऋषि, भूपतवाला सहित हरिद्वार के विभिन्न क्षेत्रों में पहुँचती है और ज़रूरतमंदों को कम्बल ओढ़ा कर सेवाधर्म का निर्वाह करती है।

इस अभियान का शुभारम्भ 20 दिसम्बर से हुआ। पीड़ित मानवता के प्रति हृदय की गहराई से अपनी सहानुभूति रखनी वाली शान्तिकुञ्ज की अधिष्ठात्री श्रद्धेया शैल दीदी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने बढ़ती ठंड से बेसहारा लोगों को बचाने के निर्देश दिये, आवश्यक मार्गदर्शन दिया। आसपास के क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया गया।

जरूरतमंदों को कम्बल ओढ़ाते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

शान्तिकुञ्ज में सुरक्षा प्रभारी ओजस्वी युवा श्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर के नेतृत्व में संतोष सिंह, अरुण तोमर, गोपाल शर्मा, प्रेम साहू, दीपक, अश्विनी आदि की टोली यह जिम्मेदारी बड़ी कुशलता के साथ निभाई। टोली कई दिनों तक रात 9 बजे निकलती और ठंड से ठिठुरते मजबूरों को कम्बल ओढ़ा करा हार्दिक संतोष की अनुभूति करती रही। यह क्रम रात 1 बजे तक चलता था। इस बीच भारतमाता मंदिर, राठी चौक, खड़खड़ी, सवानंद घाट, सूखी नदी, पावनधाम से लेकर ठोकर नं 1 से 18 तक के क्षेत्र में 500 से अधिक लोगों को कम्बल ओढ़ाये गए। यह कार्यक्रम कई दिनों तक चला।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार सम्पादन : फोन 9258369413
email : news.shantikunj@gmail.com

Publication date: 12.1.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23